सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ — 226007
फोन : 0522—2740406
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अप्रैल, 2018 वर्ष 17 अंक 02

सच्चा राही

सच्चा राही सच फैलाता यह तो उस की फ़ितरत है
उस के बस में कुछ भी नहीं है यह तो रब की नुसरत है
भले अ़मल की दावत देना बुरे अमल को बुरा बताना
रब का करम है उस पर देखो हर जा इसकी शुहरत है
रब की अपने इबादत करना ख़ल्के़ ख़ुदा की ख़िदमत करना
सब को इसकी दावत देना उसकी यह ख़ासीयत है
भला सभी का चाहो तुम बुरा न चाहो किसी का भी
सच्चा राही यही है कहता बुरे से उस को नफ़रत है
जवां हो भाई या हो बूढ़े होश में आओ फ़ौरन तुम
मौत से पहले कर लो नेकी अभी तो तुम को फ़ुरसत है

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। SACHCHARAHI A/c. No. 10863759642 IFS Code: SBIN0000125 Swift Code: SBININBB157 State Bank of India, Main Branch, Lucknow. और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें। बराये करम पैसा जमा हो जाने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 या ईमेल पर खरीदारी नम्बर के साथ इत्तिला ज़रूर दे दें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा.................................मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी 05

प्यारे नबी की प्यारी बातें.................अमतुल्लाह तस्नीम 07

अपनी कहानी......................................डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी 08

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद.......हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0 11

आदर्श शासक......................................मौलाना अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी 15

नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत.....मौलाना मंजूर नोमानी रह0 18

आपके प्रश्नों के उत्तर.......................मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी 28

क्या हम नबीये पाक सल्ल0.............मौलाना जाफर मसऊद नदवी 32

चिन्ताजनक है बढ़ती बेरोज़गारी......डॉ0 मुहम्मद अहमद 37

काला कलूटा जादूगर.........................इदारा 40

कारियाने सच्चा राही को सलाम......इदारा 41

उर्दू सीखिए..इदारा 42

क़ुर्आन की शिक्षा

–मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-निसा:

अनुवाद–

जो तुम्हारी ताक में रहते हैं, फिर अगर अल्लाह की ओर से तुम्हें विजय प्राप्त हुई तो कहते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों की क़िसमत ने साथ दिया तो उनसे कहते हैं कि क्या हमने तुम्हें घेर न रखा था और मुसलमानों से बचाया न था? बस अल्लाह ही क़यामत के दिन उनके बीच फैसला कर देगा और अल्लाह हरगिज़ मुसलमानों पर काफ़िरों को कोई राह न देगा[1](141) बेशक मुनाफिक़ लोग अल्लाह से चाल चल रहे हैं हालांकि अल्लाह उन्हीं पर चालों को उलट रहा है[2] और जब नमाज़ में खड़े होते हैं तो बेदिली के साथ खड़े होते हैं (मात्र) लोगों को दिखातें हैं और अल्लाह को तो कुछ यूं ही सा याद करते हैं(142) उसी के बची डांवाडोल रहते हैं न इधर के न उधर के और अल्लाह जिसको गुमराह कर दे आप हरगिज़ उसके लिए रास्ता नहीं पा सकते[3](143) ऐ ईमान वालो! मुसलमानों को छोड़ कर काफिरों को अपना दोस्त मत बनाओ, क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने खिलाफ़ अल्लाह का खुला तर्क स्थापित कर लो[4](144) बेशक मुनाफिक़ दोज़ख़ के सबसे निचले दर्जे में होंगे और आप उनका कोई मददगार न पाएंगे(145) सिवाय उन लोगों के जिन्होंने तौबा की और सुधार कर ली और मज़बूती के साथ अल्लाह का सहारा पकड़ा और अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लिया तो वे लोग ईमान वालों के साथ हैं और आगे अल्लाह ईमान वालों को बड़ा बदला देने वाला है(146) अगर तुम शुक्र करने वाले बन जाओ और मान लो तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा और अल्लाह तो बड़ी क़द्र करने वाला और ख़ूब जानने वाला है[5](147)। अल्लाह (किसी की) बुरी बात की चर्चा पसंद नहीं करता सिवाय उसके जिस पर अत्याचार हुआ हो और अल्लाह खूब जानता है[6](148) तुम अगर भलाई खोल कर करो या छिपा कर करो या बुराई को छोड़ दो तो बेशक अल्लाह तो बहुत माफ़ करने वाला कुदरत रखने वाला है[7](149) बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इनकार करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके पग़म्बरों में फर्क़ करें और कहते हैं कि कुछ को हम मानते हैं और कुछ को नहीं मानते और वे उसके बीच से रास्ता निकालना चाहते हैं(150) वही लोग वास्तव में काफ़िर हैं और काफ़िरों के लिए हमने अपमानजनक

अज़ाब तैयार कर रखा है[8] (151) और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए हैं और उनमें किसी के बीच फर्क़ नहीं किया ऐसों को अल्लाह जल्द ही उनके बदले दे देगा और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला और बड़ा ही दयालु है(152) अहले किताब आप से मांग करते हैं कि आप उन पर आसमान से कोई किताब उतार दें तो मूसा से वे इससे बड़ी मांग कर चुके हैं तो उन्होंने कहा था कि हमें अल्लाह खुल्लम–खुल्ला दिखा दीजिए तो उनके इस नाहक़ काम की वजह से बिजली उन पर आ गिरी फिर उनके पास खुली निशानियां आने के बाद भी उन्होंने बछड़ा बना लिया तो हमने उसे माफ़ किया और हमने मूसा को खुली सत्ता प्रदान की(153) और उनसे वादा लेने के लिए हमने उनके ऊपर तूर पहाड़ को उठा दिया और हमने उनसे कहा कि दरवाज़े से सिरों को झुका कर प्रवेश करना और हमने उनसे कहा कि सनीचर में सीमा न लांघना और हमने उनसे दृढ़ संकल्प लिया[9] (154)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. दुन्या के लोभी हैं मुसलमानों की विजय होती है तो उनमें शामिल होना चाहते हैं माल–ए–ग़नीमत (युद्ध में शत्रु धन) की लालच में, और काफ़िरों की विजय हो तो उनके पास जा कर एहसान जताते हैं कि तुम हारने वाले थे और हमने तुम्हें बचाया अतः हमें उस का आर्थिक लाभ दो, और उनकी असल कामना तो यह है कि मुसलमान मिट जाएं और यह क़यामत तक नहीं हो सकता, अल्लाह तआला इसका अवसर नहीं देगा।

2. अपने कुफ्र व इनकार को छिपा कर समझते थे कि धोखे में डाले रखेंगे अल्लाह ने सब खोल दिया कि अब किसी लायक़ न रहे, और खुद ऐसा धोखा खाए कि दुन्या व आख़िरत दोनों गवां दिये।

3. मुनाफिकों का हाल बयान हो रहा है कि नमाज़ भी दिखाने के लिए पढ़ते हैं, ताकि मुसलमान समझे जाएं, न उनको इस्लाम पर भरोसा है और न कुफ़्र व इनकार पर बहुत ही दुविधा और अचंभा में डावांडोल हो रहे हैं।

4. काफ़िरों से दोस्ती करना मुनाफिक़ों का काम है, तो तुम उससे दूर रहो ताकि तुम्हारे विरुद्ध कोई प्रमाण न स्थापित हो जाए, और मुनाफिक़ों का हाल अगली आयत में बयान हो रहा है।

5. जो भी काफ़िर या मुनाफिक़ तौबा कर ले और सुधार कर ले तो अल्लाह दण्ड क्यों देगा, वह तो बड़ा ही दयालु और कृपालु है, तुम मान लो तो उसकी नेमतों का मजा उठाओ।

6. अनावश्यक लोगों की बुराइयां न ज़ाहिर की जाएं, ग़ीबत अल्लाह को बिल्कुल पसंद नहीं है, हां कोई सताया हुआ है तो वह अपने बचाव के लिए अत्याचारी के अत्याचार को बयान कर सकता है और अल्लाह खूब सुनता जानता है, अगर उसको न भी बयान किया गया तो अल्लाह पीड़ित का काम बनाने वाला है।

शेष पृष्ठ....14 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

जाहिलियत के कार्यो से अप्रसन्नताः—

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि ने फरमाया जो मुंह पीछे गिरेबान फाड़े और जाहिलियत की आवाज लगाये वह हम से नहीं। (बुखारी—मुस्लिम)

जाहिलियत की आवाज से अर्थातः कौम या कबीले की दुहाई दे कर रोना और वावेला करनाः—

हज़रत अबू बुर्दा रज़ि0 से रिवायत है कि अबू मूसा रज़ि0 दर्द की शिद्दत से बेताब हो गये और बोहोशी तारी हो गयी, उस समय उनका सर उनकी किसी बीवी के रानों पर था वह यह हाल देख कर चिल्ला—चिल्ला कर रोने लगीं वह बेहोशी की वजह से उनको मना न कर सके, जब होश में आये तो कहने लगे मैं उस शख्स से बेज़ार (अप्रसन्न) हूं जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि बेज़ार हैं, बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि उससे बेजार हैं जो नौहा (मुर्दे पर रोना धोना) करे, मुसीबत के समय सर मुंडाये और गिरेबान फाड़े।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत मुगीरा बिन शोबा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि से सुना है, फरमाते थे कि जिस पर नौहा किया जाता है उस पर नौहा करने की वजह से कयामत में अज़ाब होगा। (बुखारी—मुस्लिम)

नौहा न करने पर बैअ़तः—

हज़रत उम्मे नसीबा रज़ि0 से रिवायत है कि सूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बैअ़त करते समय हम से वादा लिया था कि हम नौहा न करेंगे। (बुखारी—मुस्लिम)

मैय्यत की तारीफ़ों से मुर्दे को तानाः—

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि0 से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन रवाहा पर गशी तारी हो गयी तो उनकी बहन ने वाजबलाह कजा व कजा कह कर रोना शुरु किया यानी उनकी मुसीबतें बयान करने लगी।, जब उनको होश आया तो बहन से कहने लगे तुम मेरी खूबियां बयान करती थीं। और मुझे उसका ताना दिया जाता था कि तू ऐसा ही है।

(बुखारी)

आँसू बहाने और दिली सद्मा पर गिरिफ़्त नहीः—

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि सअद बिन उबादा रज़ि0 बीमार हुए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि0 सअद बिन अबी वक्क़ास और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 को ले कर उनकी इआदत को तशरीफ ले गये जब आप वहां पहुंचे तो उनको गशी की हालत में पाया, आपने फरमाया क्या इंतिकाल कर गये? लोगों ने

शेष पृष्ठ....39 पर

अपनी कहानी

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

देहातों मूं साधारणतः जन्म तिथि लिखने का रवाज ना पहले था ना अब है, मेरी जन्मतिथि भी नहीं लिखी गई। जब मैं लगभग सात आठ वर्षों का हो गया तो एक दिन वालिद साहिब मुझे ले कर स्कूल में नाम लिखाने गये, पहले स्कूल बहुत कम होते थे और दूर दूर होते थे, मेरे घर के लगभग 3 कि0मी0 दूरी पर पूराएं ग्राम में एक प्राइमरी स्कूल था, उसके हेडमास्टर पण्डित सीताराम जी थे और उनके नाइब मुंशी हरिप्रसाद कायस्थ जी थे। वालिद साहिब ने पण्डित जी को मेरा नाम हारून बताया, पण्डित जी ने कहा, नहीं नहीं, अब्बासी काल में एक बहुत ही प्रसिद्ध बादशाह "हारून रशीद" गुज़रा है, इस बच्चे का नाम उसी बादशाह के नाम पर हारून रशीद लिखा जायेगा। इस तरह मेरा नाम स्कूल में हारून रशीद लिखा गया और पण्डित जी ने अपने अनुमान से मेरी जन्मतिथि 11 अगस्त सन् 1933 लिखी, जो लगभग सही थी।

मेरे वालिद साहब के सम्बंध दोनों टीचरों से बहुत अच्छे थे, वालिद साहिब ने दोनों को घर पर दावत पर भी बुलाया था, मुझे याद है पण्डित सीताराम जी ने अपना खाना कटहल की सब्जी और रोटी खुद बना कर खाया था। मालूम नहीं किस वजह से थोड़े दिनों बाद पण्डित सीताराम का ट्रांसफर हो गया और दर्जा 3 और 4 तोड़ दिया गया।

अब यह स्कूल प्राइमरी के बजाय प्रेप्रेट्री हो गया, अब तो लोग इस नाम को जानते भी नही हैं, प्रेप्रेट्री स्कूल में 3 दर्जे होते थे, इनफेन्ट क्लास, अव्वल और दोएम। अब स्कूल के जिम्मेदार मुंशी हरिप्रसाद हो गये, वह बड़े मेहनती थे। उनकी एक विशेषता यह थी कि वह मुस्लिम लड़कों से नमाज़ पढ़वाते थे और जिस लड़के को नमाज़ न आती थी दूसरे लड़कों से सिखवाते थे। विशेष कर जुमे की नमाज़ के लिए हर मुस्लिम लड़के को मस्जिद भेजते थे। प्रेप्रेट्री पास करने के बाद मेरा नाम रूदौली के नोटीफाइडेरिया स्कूल में लिखा गया, यह स्कूल प्राइमरी था जिसके हेडमास्टर मौलवी रौनक़ अली साहिब थे, और उनके नाइब मुंशी मथुरा प्रसाद (कायस्थ) थे। दोनों बहुत काबिल थे। मौलवी रौनक अली जहां हिसाब में बहुत माहिर थे वहीं हिसाब पढ़ाने में भी बड़े माहिर थे। उस वक्त के कानून के अनुकूल वह मुझे दरियाबाद ले गये और काबिलियत का इम्तिहान दिलवाया, जिसमें मैं पास हो गया और मुझ को मिडिल के तीन सालों तक दो रूपये महीना सरकारी वज़ीफा मिलता रहा। पहले प्राइमरी स्कूल चहारूम तक होता था और मिडिल स्कूल में पांचवा, छठा, सातवां तीन दर्जे होते थे

चहारूम पास करके मैं मिडिल में आ गया उस वक़्त उसका नाम हिन्दोस्तानी मिडिल स्कूल था। उसके हेडमास्टर, मास्टर हबीब हुसैन

साहिब थे और उनके नाइब मौलवी मोहम्मद मिर्ज़ा थे। स्कूल में एक और मुस्लिम उस्ताद मौलवी ख़ुदाबख़्श थे, इनके अलावा पांच हिन्दू टीचर भी थे, मार्च सन् 1948 में मिडिल का नतीजा निकला, मैं फर्स्ट डिवीज़न पास था और हिसाब में मुम्ताज़ था, लेकिन उसके बाद वालिद साहिब ने मेरी पढ़ाई रोक दी। जिसका मेरे साथियों को बहुत दुख हुआ। अब मैं खेती के कामों में लग गया, सन् 1951 में वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया और घर की जिम्मेदारी मुझ पर आ गई, मुझ से छोटे तीन भाई थे एक बहन थी, माँ थीं मेरी शादी हो चुकी थी, बड़ी बहन की शादी हो चुकी थी सन् 1955 ई0 तक मैंने खेत का काम किया फिर मुझ से मेरे छोटे भाई कियामुद्दीन का मशवरा हुआ कि मैं कोई नौकरी कर लूं अतएव रूदौली के मास्टर लतीफुर्रहमान के मशवरे से "ख़ानक़ाह व मदरसा अबू अहमदिया गुलचप्पा कलां (अलियाबाद) में पढ़ाने का काम शुरु कर दिया, इस मदरसे में कानपुर और लखनऊ के बड़े बड़े उलमा सालाना जलसे में आते थे। इस मदरसे में दीन की बड़ी अच्छी अच्छी किताबें थीं जिनका मैंने गहरा मुताअ़ला किया, यही सन् 1956 ई0 में मैं हज़रत मौलाना मुहम्मद अब्दुश्शकूर रहमतुल्लाह अलैहि से बैअ़त हो गया। मैंने इस मदरसे में बड़ी मेहनत से पढ़ाया लेकिन किसी कारण यह मदरसा छोड़ कर गांव का दूसरा मदरसा, मदरसा इमदादिया इस्लामियां अलियाबाद चला गया, दो साल से ज़ियादा वहां भी पढ़ाया लेकिन आखिर में मदरसा अबू अहमदिया फिर लौट आया, उस वक़्त मेरी तनख्वाह 40 रूपये महीना खुश्क थी, चुनांचे एक शागिर्द वज़ीर अली के मशवरे और हज़रत मौलाना मुहम्मद अब्दुश्शकूर फारूक़ी रह0 की इजाज़त से मैं मालेगांव चला गया वहां शागिर्द वज़ीर अली की मदद से पांच रूपये यौमिया पाने लगा लेकिन मेरा दिल वहां नहीं लगा।

हज़रत मौलाना अली मियां साहिब रह0 से मेरा तअ़ल्लुक़ था और ख़ातो किताबत भी थी, हज़रत ने मुझे हुक्म दिया कि नदवा आ जाओ, चुनांचे सन् 1960 ई0 में मैं नदवा आ गया, एक साल तक चंदा वसूली का काम किया, फिर तब्लीग़ी मरकज़ के मकतब में पढ़ाना शुरु कर दिया उस वक़्त तब्लीग़ी मरकज़ में लगभग 60 बच्चे पढ़ते थे और नदवे की तरफ से दो मुदर्रिस पढ़ाते थे, मार्च सन् 1963 ई0 में जनाब मोहम्मद हसन खां अर्शी साहिब ने मदरसा सानविया (जो अब माहद कहलाता है) में मुझे बुलवा लिया, और अब मैं वहां पढ़ाने लगा।

किसी वजह से सन् 1968 ई0 में मैंने 6 महीने तक निज़ामत में भी काम किया है लेकिन फिर मदरसा सानवीया आ गया। लेकिन अभी तक मैं केवल मिडिल पास था परन्तु कई वर्षों पढ़ाने के सबब पढ़ाने में महारत रखता था।

उस वक्त तक नदवतुल उलमा में यह ज़ाबिता (नियम)

था कि हज़रत नाज़िम साहब नदवतुल उलमा की इजाज़त के बिना कोई टीचर, कोई इम्तिहान नहीं दे सकता था, मैंने इस ज़ाबिते की पूरी पाबन्दी की, हज़रत नाज़िम साहिब से हर इम्तिहान की इजाज़त ली। सन् 1968 ई0 और सन् 1970 में प्राइवेट तरीक़े से हाईस्कूल और इण्टर किया, सन् 1972 में ऐेज़ ए टीचर फर्स्ट डिवीज़न में बी0ए0 पास किया, फिर सन् 1976 ई0 में उर्दू में एम0ए0 करके उसी साल मुअल्लिमे उर्दू की सनद हासिल की और हज़रत नाज़िम साहिब से इजाज़त ले कर उर्दू में पी0एच0डी0 में दाखिला लिया और सन् 1978 ई0 में पी0एच0डी0 का मक़ाला दाख़िल कर दिया।

खास बात यह है कि इन इम्तिहानात के लिए ना कोई कोचिंग की ना किसी मास्टर से मदद ली, दिन में अपनी पूरी ड्यूटी देता, रात में खुद मुतालआ करके इम्तिहान की तैयारी करता, सिर्फ बी0ए0 की फारसी के लिए हज़रत मैलाना अब्दुल हफीज़ बलियावी रहमतुल्ला अलैहि (साहिबे मिस्बाह) से ''गुलिस्तां'' के बाज़ अबवाब पढ़े थे।

सन् 1978 ई0 में जनाब मौलाना सलमान हुसैनी ने मेरे लिए रियाज़ यूनिवर्सिटी (जो अब किंग सऊद यूनिवर्सिटी कहलाती है) में अरबी पढ़ने का वीज़ा हासिल कर लिया, अल्लाह तआला मौलाना को इसकी भरपूर जज़ा दे मौलाना का यह एहसान मैं कभी ना भूलूंगा, यह वीज़ा सिर्फ दो साल का होता था और इसके लिए अलग से एक शोबा क़ाइम था जिसका अरबी में "माहदुल्लुग़तुल अरबीया" नाम था। सन् 1979 ई0 के आख़िर में मैं रियाज़ पहुंच गया और माहद में अरबी पढ़ने लगा लेकिन वहां अल्लाह तआला ने मेरे लिए ऐसे हालात पैदा कर दिये कि मेरा दाखिला माहद के बाद एम0ए0 में हो गया, इस कोर्स में पहले दो साल तक मुझे वहां के बी0ए0 का उबूरी कोर्स पूरा करना पड़ा उसके बाद एम0ए0 का कोर्स पूरा किया, सन् 1985 ई0 में मुझे एम0ए0 की डिग्री मिल गयी। वहां मैंने कम से कम बीस असातिज़ा से पढ़ा लेकिन डॉ0 मुस्तफा आज़मी से बहुत मुतअस्सिर हुआ, वह मेरे एम0ए0 के मक़ाले के मुशरिफ भी रहे।

सौग़ातः– अल्लाह के फज़्ल से इस दौरान पांच हज और सात उम्रे की तौफीक़ मिली, उस वक्त एम0ए0 के तलबा को बीवी का भी वीज़ा मिलता था इसलिए दो साल तक मेरी अहलिया भी मेरे साथ रहीं और दो हज़ किये।

अल्लाह के फज़्ल से मेरा छोटा भाई हाफिज़ मुहम्मद वसीम नदवी और मेरा बेटा मतलूब अहमद और मारूफ अहमद भी रियाज़ गये, माहद में पढ़ा और हज भी किया, इनके अलावा कई रिश्तेदारों को काम और हज का मौक़ा मिला मेरा एक खास शागिर्द हाफिज़ सय्यिद मोहम्मद राफे ने भी माहद में पढ़ा और हज किया, उसके बाद अल्लाह तआला ने सय्यद मोहम्मद राफे को बहुत नवाज़ा, उन्होंने मेरी काफी माली मदद की। अल्लाह तआला उनको इसका बदल दे।

शेष पृष्ठ....27 पर

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

—हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0)　　— अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

तौहीद की दावत और उसके तक़ाज़े (आवश्यकताएं):–

अनुवादः *"तो जो सरकश (शैतान) को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाये तो उसने मजबूत सहारा थाम लिया।"*

(सूरः अल् बकरहः–256)

इसलिए पवित्र कुर्आन ने ऐसे व्यक्तियों के ईमान का दावा स्वीकार नहीं किया जो तागूत (शैतान) के प्रतिनिधियों तथा उनके केन्द्रों की ओर ध्यान लगाते हैं। और उनको अपना पंच और मध्यस्थ बनाते हैं।

अनुवादः *"क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा तो करते हैं कि वे उस पर ईमान रखते हैं जो सत्य तुम पर उतारा गया और जो तुम से पहले उतारा गया। और चाहते हैं कि अपना मामला तागूत के पास ले जा कर फैसला कराएं जब कि उन्हें हुक्म दिया गया है कि वे उसका इन्कार करें? लेकिन शैतान तो उन्हें भटका कर बहुत दूर डाल देना चाहता है।*

(सूरः अन्निसा–60)

इस कुफ़्र की गन्ध उन लोगों से भी नहीं निकली जो मुसलमान की रेखा में आ जाने के बाद "जाहिलियत" से मुँह न मोड़ सके और जाहिलियत के अकीदों व रसमों से बेख़बर न हो सके। उनके दिलों से अभी तक उन चीज़ों की नफ़रत और घृणा नहीं गयी और उन कार्यों की तहकीर (घटिया समझना) नहीं निकली जिनको जाहिलियत बुरा समझती है, उनसे नफ़रत और तहकीर करती है, चाहे वह अल्लाह के दीन में पसन्दीदः हों और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महबूब सुन्नत हो।

इसी तरह उनके दिलों में अभी तक उन आचरणों, रस्मों तथा आदतों के प्रति मोह और आदरणीय हैं, चाहे वह अल्लाह की शरीअ़त में मकरूह बुरे व तुच्छ हों। इसी तरह जिनके दिलों से अभी तक जाहिली समर्थन और पक्षपात दूर नहीं हुई और उनका अमल अरब की जाहिलियत के उस लोकप्रिय सिद्धान्त पर है कि अपने भाई की हर हाल में मदद करो, चाहे ज़ालिम हो, चाहे मज़लूम। इससे ज़ियादा नाजुक बात यह है कि इस्लाम को स्वीकार कर लेने के बाद भी वह मुसलमान कहलाने के बावजूद भी अच्छे और बुरे का पैमाना (कसौटी) वही है जो जाहिलियत में होता है, चीज़ों की कीमत वही हो जो जाहिलियत ने कायम कर दी है, जीवन के उन्हीं मूल्यों और उन्हीं स्तरों का सम्मान हो जो जाहिलियत (अज्ञानता) तस्लीम करती है। इस्लाम के सही और शुद्ध होने की दलील यह है कि कुफ़्र और उसके पूरे वातावरण, उससे जुड़ी तमाम बातों, उसकी तमात विशेषताओं से नफरत पैदा हो जाये। और उसकी ओर वापसी और इससे ग्रसित हो जाने की कल्पना

से आदमी को तकलीफ हो। और ईमान की पुख्तगी (परिपक्वता) यह है कि वह कुफ्र के किसी छोटे से छोटे काम के मुकाबले में मौत को ज़ियादा पसन्द करता है। बुखारी शरीफ की हदीस है।

अनुवादः *"तीन चीजें जिस आदमी में होंगी उसको ईमान की मिठास महसूस होगी। एक यह कि अल्लाह और उसका रसूल सर्वाधिक प्रिय हो, दूसरे यह कि किसी दूसरे इन्सान से सिर्फ अल्लाह ही के लिए महब्बत हो, तीसरे यह कि कुफ़्र में जाना उसके लिए उतना ही नागवार हो जितना आग में डाला जाना। (बुखारी–मुस्लिम)*

सहाबा (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी) का यही हाल था, उनको अपने पूर्व काल की जाहिलियत से बड़ी नफरत पैदा हो गयी थी। उनके नजदीक जाहिलियत से बढ़ कर कोई तौहीन न थी। वह जब अपने इस्लाम लाने से पहले के जमाने की चर्चा करते तो बड़ी शर्मिन्दगी और नफरत के साथ। उस ज़माने की तमाम बातों, कर्म व कुफ़्र और अल्लाह की नाफरमानी से उनको न सिर्फ धार्मिक व बौद्धिक बल्कि स्वाभाविक रूप से घृणा थी। अल्लाह उनका यह गुण इस तरह बयान करता है।

अनुवादः *लेकिन अल्लाह ने तुम्हारे दिल में ईमान को महबूब (प्रिय) बनाया और उसको तुम्हारे दिलों में सुन्दर बना दिया और कुफ़्र और फिस्क (उल्लंघन और अवज्ञा) और नाफरमानी को तुम्हारे लिए नफरत की चीज़ बना दिया।*

(सूरः अल हुजुरात–7)

जाहिलियत की एक निशानी यह है कि जब अल्लाह व रसूल का हुक्म सुनाया जाये तो पुराने रस्म व रिवाज और बाप दादा के तौर तरीक़े का नाम लिया जाये और अल्लाह व रसूल के मुकाबले में बीते ज़माने और पुराने दस्तूर का प्रमाण पेश किया जाये।

अनुवादः *और जब उनसे कहा जाता है! जो अल्लाह ने उतारा है उस पर चलो तो जवाब में कहते हैं नहीं हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप–दादा को पाया है भला अगर उनके बाप–दादा कुछ समझ न रखते रहे हों और न सच्चे मार्ग पर चलते रहे हों। (तब भी यह उन्हीं की पैरवी करेंगे)। (सूरःअल बकरह्–170)*

अनुवादः *नहीं बल्कि वे कहते हैं "हमने अपने बाप–दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उन्हीं के पग चिन्हों पर चल रहे हैं।" (सूरः अज़्ज़ुखरूफ़–22)*

अल्लाह के हुक्म और वही (ईशवाणी) के मुकाबले में अपने बाप–दादा के अमल और अपनी इच्छा व मरज़ी की पैरवी करना खास जाहिली दीन है।

अनुवादः *उन्होंने कहा! ऐ शुएब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुझे यही सिखाती है कि उन्हें हम छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप–दादा पूजते आ रहे हैं या हम अपने माल में मनमानी छोड़ दें। (सूरः हूद–87)*

अतः ऐसे लोग जाहिलियत (अज्ञानता) से निकल कर इस्लाम में पूरे तौर पर दाखिल नहीं हुए, जिन्होंने अल्लाह के मुकाबले में हर चीज नहीं छोड़ा और जिन्होंने अपने को पूर्णतः अल्लाह के हवाले नहीं किया। यह पूर्ण समर्पण और तस्लीम

वह इस्लाम है जिसका हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हुक्म हुआ और उन्होंने उसको स्वीकार किया।

अनुवादः *जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम से उनके रब ने कहा कि अपने रब के हवाले हो जाओ और उसकी पूरी ताबेदारी करो तो उन्होंने कहा कि मैंने अपने आपको सारे जहान के पालनहार के हवाले कर दिया।*

(सूरः अल बक़रह्–131)

और जिसका तमाम मुसलमानों को हुक्म है।

अनुवादः *तुम्हारा पूज्य हाकिम एक ही अकेला है तो उसी के हवाले हो जाओ तथा मुकम्मल फरमांबरदार बन जाओ।*

(सूरः अल हज्ज–34)

अगर यह नहीं है तो मानो अल्लाह से जंग है। इसलिए इस पूर्ण इस्लाम को एक जगह अल्लाह ने ''सिल्म'' कहा है अर्थात यह अल्लाह से सुलह है।

अनुवादः *ऐ ईमान वालो! इस्लाम और सुलह में पूरे–पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के कदमों पर न चलो! वह तो तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।*

(सूरः अल बकरह्–208)

याद रहे कि जाहिलियत का मतलब सिर्फ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पूर्व की अरब की जिन्दगी ही नहीं है, बल्कि हर वह गैर इस्लामी ज़िन्दगी और व्यवस्था है, जिस का स्रोत ''वही'' (ईशवाणी) व नबूवत और अल्लाह की किताब व नबियों की सुन्नत (आचरण) न हो, और जो इस्लामी जीवन के आदेशों व मसलों के अनुरूप न हो, चाहे वह अरब की जाहिलियत हो, या ईरान की मुजदक्कियत (एक तरह की व्यक्ति पूजा) या हिन्दुस्तान का ब्राह्मणवाद या मिस्र की फिरऔनियत या तुर्की की तूरानियत या इस युग की पश्चिमी सभ्यता या मुसलमान कौम की शरीअत के विरुद्ध रसमें व आदतें, अखलाक व संस्कार और विचारधारा और भावनायें, चाहे वह पुरानी हों या आधुनिक, भूतकाल हो या वर्तमान काल।

कुफ़्र एक नकारात्मक चीज़ ही नहीं है बल्कि एक सकरात्मक चीज़ भी है, वह सिर्फ अल्लाह के दीन के इनकार का नाम नहीं है, बल्कि वह एक मज़हबी और नैतिक व्यवस्था और स्थायी दीन है, जिसमें अपने कर्तव्य भी हैं, और बुरी व अवैध बातें भी, इसलिए यह दोनों एक जगह एकत्र नहीं हो सकते और इन्सान एक समय में इन दोनों का वफादार नहीं हो सकता।

नबी कुफ्र को जड़ से समाप्त करते हैं। वह कुफ्र के साथ किसी रवादारी और समझौता के रवादार नहीं होते। कुफ्र को पहचान लेने में भी उनको बड़ी महारत होती है। और इस बारे में वह बड़ी दूर दृष्टि वाले और सूक्ष्मदर्शी होते हैं। अल्लाह तआला उनको इस के बारे में पूरी हिकमत प्रदान करता है। उनको ईश्वर की दी हुई सूझ–बूझ पर भरोसा किये बिना चारा नहीं। दीन की रक्षा इसके बिना सम्भव नहीं कि कुफ़्र और इस्लाम की जो सीमाएं उन्होंने निर्धारित कीं उनकी हिफाजत की जाय इसमें थोड़ी भी असावधानी

दीन को इतना बिगाड़ कर रख देती है कि जितना यहूदी, ईसाई और हिन्दुस्तान के मज़हब बिगड़ चुके हैं।

नबियों के उत्तराधिकारी भी इस बारे में उन्हीं की सूझ–बूझ और साहस रखते हैं। वह कुफ़्र या कुफ़्र की महब्बत या उसकी मदद जिस रूप में सामने आये, वह उसको तुरन्त भांप लेते हैं। उनको इसमें कोई शंका नहीं होती और उसका विरोध करने में उनके लिए कोई मसलहत रुकावट नहीं बनती।

उनके ज़माने के संकीर्ण दृष्टि वाले या हर बात में सुलह के पक्षधर जो दैर व हरम, काबा व बुतखाना में फर्क करना ही कुफ़्र समझते हैं, उनका मजाक़ उड़ाते हैं और निन्दा के साथ उनको ज्ञानी, और खुदाई फौजदार की उपाधि देते हैं। लेकिन वह अपना कार्य पूरे धैर्य के साथ करते रहते हैं। और निःसंदेह पैगम्बरों के दीन की हिफाज़त हर ज़माने में इन्हीं लोगों ने की है।

और आज इस्लाम यहूदियत, ईसाइयत और हिन्दू मत से अलग रूप में जो दिखता है वह इन्हीं के साहस और धैर्य व विनय का नतीजा है।

.... जारी........ ◆◇◆

कुर्आन की शिक्षा..............

7. इस में ताकीद है कि अल्लाह शक्ति के बावजूद माफ़ करता है तो बन्दों के लिए भी माफ़ कर देना बेहतर है।

8. विशेष रूप से यहूदियों का उल्लेख है जो मूसा को मानते थे, ईसा अलैहिस्सलाम का इनकार करते थे और जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबी बना कर भेजे गये तो यहूदियों और ईसाइयों दोनों ने इनकार कर दिया।

9. कुछ यहूदी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और कहने लगे कि अगर आप पैग़म्बर हैं तो आसमान से लिखी लिखाई किताब ला कर दीजिए जैसा कि मूसा अलैहिस्सलाम लाये थे उस पर यह आयत उतरी कि उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम से कैसी कैसी मांगें कीं जो पूरी हुईं फिर भी इनकार कर गए और बछड़ा पूजने लगे और जो आदेश दिये गए उनको न माना, तूर पहाड़ उनके ऊपर कर दिया गया और कहा गया कि मानो वरना पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा तो विवश हो कर माना, जब कहा गया कि शहर में झुकते हुए (विनम्रतापूर्वक) प्रवेश करो तो अकड़ते हुए और अपशब्द बकते हुए प्रवेश किया और जब कहा गया कि सनीचर के दिन का शिकार न करना तो भी न माने और हीले बहाने कर के शिकार करने लगे, अल्लाह कहता है कि कितनी निशानियों को देख कर भी उन्होंने न माना तो अब उनकी नई मांगों पर निशानियां दिखा भी दी जाएं तो उनको क्या हासिल।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

—पिछले अंक से आगे

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी

—अनुवादः अतहर हुसैन

दूसरे ख़लीफ़ा
हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0

रूखा़-सूखा भोजनः-

आपका भोजन इतना सादा और मामूली होता था कि दूसरों को मुश्किल से आपके साथ भोजन करने की इच्छा होती थी। भोजन के समय यदि लोग उपस्थित होते तो आप उन्हें आमंत्रित करते परन्तु लोग क्षमा चाहते। हज़रत हफ़्स इब्ने अबिलआ़स बहुधा आपके पास आया करते थे परन्तु भोजन कभी आपके साथ न करते। एक दिन हज़रत उमर रिज़0 ने पूछा कि क्या कारण है कि तुम सदा क्षमा—याचना प्रकट करते हो और कभी मेरे साथ खाने में सम्मिलित नहीं होते। पहले उन्होंने उत्तर देने में हिचकिचाहट प्रकट की परन्तु आपके बहुत कहने पर उत्तर दिया कि आपका भोजन इतना सादा और मामूली होता है कि लोगों को उसे खाने की इच्छा नहीं होती। हमारे घरों में भी भोजन तैयार होता है वह इससे कहीं अधिक स्वादिष्ट तथा उत्तम होता है। उनका यह उत्तर सुन कर हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा कि मैं भी अगर चाहूं तो अच्छे से अच्छा भोजन कर सकता हूं परन्तु परलोक का भय ऐसा है कि सुख भोगने का साहस नहीं होता।

एक बार एक और सहाबी उत्बा इब्ने फ़रक़द खाने के समय उपस्थित थे। हज़रत उमर रज़ि0 ने उन्हें आमंत्रित किया और वह खाने में सम्मिलित हो गए लेकिन रोटी के सूखे टुकड़े उनकी हलक़ से नहीं उतरते थे। आख़िरकार उन्हें कहना ही पड़ा कि अमीरुल मोमिनीन, खुदा ने आपको इतने बड़े राज्य का शासक बनाया है, यदि आप अपनी आवश्यकता—पूर्ति हेतु कुछ अधिक व्यय कर लिया करें तो इससे राष्ट्र की आय में कोई कमी नहीं हो जायेगी और न मुसलमानों को कोई हानि होगी, परन्तु हज़रत उमर रज़ि0 ने उनका परामर्श स्वीकार न किया और खेद प्रकट करते हुए उत्तर दिया कि तुम मुझे विलासता का जीवन व्यतीत करने की राय देते हो। एक बार हज़रत हफ़्सा ने भी इसी प्रकार की प्रार्थना की तो आपने उत्तर दिया कि मैं मुसलमानों के धन में से अधिक लेना पसन्द नहीं करता।

एक अवसर पर हज़रत रबीया इब्ने ज़ियाद ने भी इसी प्रकार की प्रार्थना की और अपनी आवश्यकताओं पर कुछ अधिक व्यय करने को कहा तो आपने यह कह कर उनकी बात रद्द कर दी कि राष्ट्र के अधिकारियों को राष्ट्र की चिन्ता के बजाय अपनी आवश्यकताओं की चिन्ता में लगे रहना उचित नहीं। मेरे ऊपर देश का

उत्तरदायित्व है, राज कोष की समस्त आय राष्ट्रीय सम्पत्ति के रूप में मेरे पास धरोहर है। मेरे लिए उचित नहीं कि मैं अपने ऊपर अधिक व्यय कर के इस धरोहर का अनुचित प्रयोग करूं। आप कहा करते थे कि यदि मैं सुख का जीवन व्यतीत करूं और जनता मुसीबत झेलती रहे तो मुझसे बुरा कोई नहीं। इस बारे में आप इतना सतर्क थे कि यदि कोई दूसरा व्यक्ति भी चाहता कि आपको आमंत्रित करके कुछ अच्छा भोजन कराए, तो इसे भी उचित न समझते। लोगों को आपकी दशा देख कर दया आती। वह निरन्तर देखा करते थे कि आप कितनी लगन से जनता की देख–भाल और इस्लामी राज्य के शासन–प्रबन्ध में व्यस्त रहते हैं। अतः वह सब और भी प्रयत्न करते कि किसी प्रकार आप ऐसे पौष्टिक भोजन का सेवन करें जिससे आपको शक्ति तथा बल प्राप्त हो और कठोर परिश्रम के कारण शरीर की दुर्बलता दूर हो। निःसंदेह उन लोगों को ऐसा सोचना उचित था कि शासक का कर्तव्य है कि वह अपनी आवश्यकताओं से प्रजा की आवश्यकताओं को प्रधानता दे, अपने खाने–पीने पर इससे अधिक न व्यय करे जितना देश का ग़रीब से ग़रीब व्यक्ति व्यय करता है वह इसे कदापि पसन्द न करते थे कि देश का एक भी व्यक्ति दुखों में ग्रस्त हो और वह सुख का जीवन व्यतीत करें। जन–सेवा तथा लोक–हित की जब यह भावना हो तो किस प्रकार कोई आपको अच्छा खाने–पीने के लिए राज़ी कर सकता था। लोग इस प्रकार आपको जब तैयार न कर सके तो उन्होंने दूसरा उपाय यह किया कि आपको अपने घरों पर आमंत्रित करें और इस अवसर पर उत्तम भोजन करायें परन्तु आपने इसे अच्छा न समझ कर दूसरों के साधारण भोजन को ही पसन्द किया। हज़रत यज़ीद इब्ने अबी सुफ़यान के यहां की एक घटना है कि एक बार उन्होंने खाने पर आमंत्रित किया। जब तक मामूली क़िस्म का खाना दस्तरख़्वान पर रहा, आप खाते रहे, परन्तु ज्योंही तनिक अच्छे क़िस्म का खाना लाया गया आपने हाथ रोक लिया और किसी तरह उसे खाना पसन्द न किया। तात्पर्य यह कि लोगों ने बहुत ही यत्न किया कि आप अपना जीवन स्तर कुछ ऊँचा कर लें, परन्तु आपने कभी इसे उचित न माना कि देश के ग़रीब से ग़रीब व्यक्ति के मुक़ाबले में अधिक सुख भोगें। जब आपने सीरिया देश की यात्रा की तो इसी प्रकार की एक घटना हुई। लोगों ने आपको आमंत्रित किया और आपके सम्मुख स्वादिष्ट पकवान रखे, परन्तु आपने उन्हें हाथ न लगाया। लोगों ने अधिक हठ किया तो आपने कहा, अच्छा यह बताओ कि इस प्रकार के स्वादिष्ट पकवान क्या हर व्यक्ति को प्राप्त है? लोगों ने उत्तर दिया ऐसा तो नहीं है। बहुत ही कम ऐसे लोग हैं जिन्हें इस प्रकार का उत्तम

तथा स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध है। यह उत्तर सुन कर आपने आदेश दिया कि यह बहुमूल्य तथा स्वादिष्ट पकवान मेरे सामने से हटा लिया जाय मैं ऐसी कोई भी वस्तु नहीं खाना चाहता जो सबको न मिल सके।

एक दिन सीरिया देश से दूत आया और खलीफ़ा का अतिथि हुआ। भोजन के समय जब उसने देखा कि दस्तरख़्वान पर जौ की मोटी रोटी तथा कड़ी रोटियां रखी हैं और ढंग का सालन भी नहीं है तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही और उसने पूछा– ''अमीरुल–मोमिनीन! अब आप इतना कठोर तथा कष्टमय जीवन क्यों व्यतीत करते हैं? ईश्वर ने आपको ऐसे विस्तृत राज्य का शासक बनाया है। अब आपको अच्छा जीवन व्यतीत करने का अवसर प्राप्त हुआ है, जौ की यह कड़ी तथा कष्टदायी रोटियां अब क्यों आप खाते हैं। सीरिया, ईराक़, मिस्र, ईरान और फिलिस्तीन के देशों में प्रयाप्त मात्रा में गेहूं पैदा होता है, किसी दूसरे राज्य से भी मंगवाने का प्रश्न नहीं, अपने राज्य के इन स्थानों से जितना चाहें गेहूं मँगा सकते हैं। अन्न की इतनी बहुतायत होने पर भी आप जौ की कड़ी रोटियाँ खा कर क्यों इतना कष्ट सहन करते हैं।'' हज़रत उमर रज़ि0 दूत की बातों को शान्तिपूर्वक सुनते रहे, जब वह अपनी बात पूरी कर चुका तो आपने सिर उठा कर उसकी ओर देखा और कहा ''मैंने तुम्हारा कथन सुना, परन्तु कोई फैसला करने से पूर्व मैं एक प्रश्न करना चाहता हूं। यह बताओ कि जिन उपजाऊ देशों का तुमने नाम लिया है, क्या इनमें इतना गेहूं उत्पन्न होता है कि यदि समस्त राज्य की जनता केवल गेहूं खाना चाहे तो इत्मीनान से खा सके और किसी को गेहूँ मिलने में किसी प्रकार की असुविधा न हो?'' यह प्रश्न सुन कर दूत सन्नाटे में आ गया। इतनी उच्च समता की कल्पना उसकी बुद्धि में कहां थी कि ख़लीफ़ा वही वस्तु खा सकता है जो सबको सुविधापूर्वक मिल सके। शासन के इतने उच्च आदर्श की उसने कल्पना भी न की थी कि राष्ट्र का शासक, राष्ट्र का सेवक होता है। वह जनता की सेवा करके सुख प्राप्त करता है, सब को खिलाकर स्वयं खाता है और दूसरों को पहना कर स्वयं पहनता है, उसकी दृष्टि में समस्त राज्य एक कुटुम्ब के समान है। जिस प्रकार कुटुम्ब के एक बड़े–बूढ़े की दृष्टि में परिवार के समस्त प्राणियों की आवश्यकताएं उसकी अपनी आवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं और उन्हें पूरा करने की चिन्ता उसे अपनी आवश्यकता–पूर्ति से अधिक होती है। इसी प्रकार राज्य के प्रधान तथा देश के शासक का कर्तव्य है कि प्रजा के एक–एक व्यक्ति का ध्यान रखे। समस्त देश की चिन्ता के पश्चात् अपनी चिन्ता करे और जब यह विश्वास हो जाये कि सब सुख से हैं तब उसे संतोष प्राप्त हो।

शेष पृष्ठ ......36 पर

—पिछले अंक से आगे

नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत

—मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0 —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

नमाज़ों में खुशूअ़ क्योंकर पैदा हो?:–

यहां तक जो कुछ अर्ज किया गया है, उस से नमाज़ में खुशूअ़ व हुजूर की अहम्मीयत तो नाज़रीने किराम पर वाज़ेह हो चुकी, अब खुशूअ़ व हुजूर के साथ नमाज़ अदा करने का तरीक़ा और उसकी बाज़ तदाबीर अर्ज की जाती है।

जब अज़ान की आवाज़ कान में आए तो ईमान वालों को चाहिए कि अदब के साथ उधर मुतवज्जेह हो जाएं और खयाल करें कि यह पुकारने वाला अल्लाह तआ़ला मालिकुल मुल्क की तरफ से पुकार रहा है और उसके दरबार में हाजिरी और इज़हारे उबूदीयत के लिए बुला रहा है।

फिर जब मुअज्जिन अल्लाहु अक्बर और अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु कहे तो अल्लाह की बे इन्तिहा अज़मत व किबरियाई और उसकी ला शरीक उलूहीयत के तसव्वुर को ताज़ा करते हुए खुद भी दिल व ज़बान से यही कलिमात कहें, और अगर बिल फर्ज किसी काम में मशगूल हों या किसी खिदमत में लगे हों तो ख्याल करके कि अल्लाह तआ़ला सब से बरतर और बालातर है और उसकी इबादत का हक सबसे अहम और मुकद्दम है, नमाज़ के वास्ते उस काम को मुलतवी करने के लिए तैयार हो जाएं।

फिर जब मुअज्जिन अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह कहे तो हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत के यक़ीन को दिल में ताज़ा करते हुए और रिसालत की अज़मत को मल्हूज़ रखते हुए अपने दिल व ज़बान से भी यही शहादत अदा करें।

फिर जब मुअज्जिन ह़य्या अलस्सलात और हय्या अललफलाह कहे तो खयाल करें कि यह मुअज़्ज़िन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम से, बल्कि गोया आप ही की तरफ से हम को नमाज़ के लिए बुला रहा है जिस में सारा हमारा भला है बल्कि इसी पर हमारी नजात और काम्याबी का इन्हिसार है, फिर अपने नफ़्स और अपनी रूह को मुखातब कर के मुअज़्ज़िन का यही पैग़ाम खुद अपनी ज़बान से दुहराएं।

फिर अखीर में जब मुअज़्ज़िन अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाहु कहे तो अपनी ज़बान से भी इन कलिमात को दुहराते हुए अल्लाह तआला की शाने किबरियाई और लाशरीक उलूहीयत व रूबूबीयत का तसव्वुर फिर दिल में ताज़ा करें और खयाल करें कि ऐसे अज़मत व जलाल वाले मालिकुल मुल्क लाशरीक लहु के दरबार में हाज़री और उसकी बन्दगी कितनी बड़ी सआदत है, और इसमें गफलत व कोताही किस क़दर कमीनगी और कितनी महरूमी और कैसी शक़ावत है।

फिर उस मालिकुल मुल्क के कहर व जलाल के तसव्वुर से लरज़ते हुए और उसकी शाने रहीमी व करीमी से लुत्फ व करम और अ़फ्वु व रहम की उम्मीद करते हुए निहायत आजज़ी और मसकनत और खौफ व अदब की कैफ़ीयत के साथ मस्जिद की तरफ चल दें और इस चलने के वक़्त क़ियामत के दिन क़ब्र से उठ कर मैदाने हश्र और मुक़ामे हिसाब की तरफ चलने को याद कर के क़ल्ब में एक बीम व उम्मीद की सी कैफीयत पैदा करें।

फिर जब मस्जिद में दाखिल होने लगें तो तसव्वुर करें कि खा–नए–खुदा और मालिकुल मुल्क का दरबार है, और यहां का अदब यह है कि दाहिना पांव पहले अन्दर रखा जाए यह खयाल करके दाहिना पांव पहले मस्जिद में रखें और दुआ करें–

बेहतर यह है कि दुरूद पढ़ कर अरबी में दुआ पढ़ें अगर मुश्किल हो तो तर्जमा ही पढ़ लें, ''मेरे मालिक! मेरे गुनाह बख्श दे और अपनी रहमत के दरवाज़े मेरे लिए खोल दे।

फिर अगर वुजू करना हो तो खयाल करें कि मुझे अल्लाह तआला के हुजूर में पाक व साफ हो कर हाज़िर होना चाहिए जैसा कि उस का हुक्म है नीज अहादीसे नबवीया में वुजू के फज़ाइल आए हैं मसलन यह कि ''वुजू के वक़्त आजाए वुजू के तमाम गुनाह धुल जाते हैं'' और मसलन यह कि ''कियामत में आजाए वुजू रोशन और मुनव्वर होंगे जिस के जरिए से इस उम्मत के नमाज़ी तमाम दूसरे लोगों के लिहाज से मुम्ताज़ होंगे और यह उनकी खास निशानी और पहचान होगी'' सो वुजू के वक़्त इन फज़ाइल को मल्हूज़ रखते हुए और अल्लाह तआला के फज्ल व करम से इनकी पूरी उम्मीद करते हुए वुजू करें और सुनन व मुसतहब्बात की कमा हक्कहु रिआयत रखें, बिल्खुसूस मिस्वाक का हमेशा एहतिमाम करें और यह ख्याल करें कि अपने मौला से इसी मुंह से कुछ अर्ज करना है और उसका पाक कलाम उसके हुजूर में पढ़ना है इसलिए मिस्वाक के जरिए मुंह को साफ करने में कोताही न करें।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद भी मिस्वाक का हद से ज़ियादा एहतिमाम फरमाते थे और दूसरों को बहुत ताकीद फरमाते थे, और इसके बड़े फज़ाइल और फवाइद बयान फरमाते थे।

फिर वुजू करने वाला जब इस तरह वुजू करके फारिग हो जाए तो ख्याल करे कि यह तो मैंने सिर्फ जाहिरी तहारत की है इससे ज़ियादा ज़रूरी बातिन की तहारत है यानी गन्दे इरादों और नापाक ख्यालात से और गुनाहों की नापाकी से अपने दिल की तहारत, क्योंकि अल्लाह तआला हाथ पांव और चेहरों से ज़ियादा दिलों को देखता है। पस बड़ा अहमक़ और बेवकूफ है वह इन्सान जिसने अल्लाह के हुजूर में हाजिर होने के लिए हाथ पांव वगैरा चन्द

जाहिरी आज़ा तो धो लिए लेकिन दिल की सफाई और पाकी की कोई फिक्र न की हालांकि जिस मालिक व मौला के सामने उस को हाज़िर होना और जिससे कुछ अर्ज व मारूज करना है वह सब से ज़ियादा दिलों ही को पाक और साफ देखना चाहता है, और इस पाकी का खास जरीया तौबा व इस्तिगफार है पस वुजू के बाद तमाम गुनाहों से तौबा व इस्तिगफार भी करे।

फिर जब नमाज़ के लिए खड़ा होने लगे तो कियामत में अल्लाह तआला के सामने होने वाली अपनी पेशी को याद करे और निदामत व हया और खौफ से उसके दिल की हालत वह होनी चाहिए जो निहायत मुहसिन आक़ा के सामने हाजिर होते वक़्त किसी भागे हुए खताकार गुलाम की होती है नीज़ नमाज़ के फज़ाइल का भी ध्यान करे, खुसूसन उसकी यह फज़ीलत याद करे कि यह अल्लाह तआला के सामने हुजूरी और इन्तिहाई कुर्ब का खास मौका है, और यह कि कियामत में नमाज़ ही की अच्छाई या बुराई पर आदमी की सआदत का या शक़ावत का फैसला होने वाला है, फिर यह खयाल कर के कि क्या खबर है यही नमाज़ मेरी आखरी नमाज़ हो और इसके बाद कोई नमाज़ पढ़नी मुझे नसीब न हो, लिहाजा बेहतर से बेहतर नमाज़ अदा करने का अज़्म करे, और अल्लाह तआ़ाला से तौफीक़ मांगे।

फिर जब किब्ला की तरफ रुख कर के खड़ा हो जाए तो खयाल करे कि जिस तरह मैंने अपने जिस्म का रुख बैतुल्लाह की तरफ कर लिया है जो हमारे जिस्मों का किब्ला है इसी तरह मेरे दिल का रुख पूरी यक्सूई के साथ अल्लाह ही की तरफ होना चाहिए जो कुलूब व अरवाह का किब्ला है यह ख्याल करके दिल व ज़बान से कहे। हो सके तो इसको अरबी में कहे वरना तर्जुमा कह ले, तर्जुमा ''मैंने अपना रुख कामिल यक्सूई के साथ उस अल्लाह की तरफ फेर दिया, जिसने जमीन व आसमान पैदा किए हैं। और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं, मेरी नमाज़ और मेरी सारी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो रब्बुल आलमीन है, उस का कोई शरीक नहीं, मुझे उसी का हुक्म है और मैं उसका हुक्म मानने वालों में से हूं।''

इसके बाद नमाज़ शुरुअ़ करे और सब से पहले अल्लाह तआ़ला की बे इन्तिहा अज़्मत व किबरीयाई का तसव्वुर करते हुए और अपनी जिल्लत व बेचारगी और तमाम मासिवा अल्लाह की बे हक़ीकती को पेशे नज़र रखते हुए पूरे खुशूअ़ व खुजूअ़ के साथ दिल व ज़बान से कहे ''अल्लाहु अकबर'' (अल्लाह बहुत बड़ा है, हर तरह की किबरीयाई और बरतरी उसी के लिए है) इस तक्बीरे तहरीमा के वक़्त अल्लाह तआ़ला की अज़्मत व जलाल का ज़ियादा से ज़ियादा ध्यान और दिल में ज़ियादा से ज़ियादा खुशूअ़

और तजल्लुल की कैफियत होनी चाहिए, बाज आरिफीन ने लिखा है कि पूरी नमाज़ की इजमाली हक़ीक़त अल्लाहु अकबर में सिम्टी हुई है और सारी नमाज़ इसी अल्लाहु अकबर के माने की तफ्सीली और अमली सूरत है।

नोटः—अब आप नामज़ में दाखिल हो गए, अब आखिर नमाज़ तक ज़बान से अरबी के अलावा किसी और ज़बान का लफ़्ज़ नहीं बोल सकते। अल्लाहु अकबर कहते वक़्त दोनों हाथ कानों तक उठा कर नाफ पर बांध लें।

फिर अल्लाह तआला को हाज़िर व नाजिर यकीन करते हुए और अपने आप को उसके हुजूर में खड़ा हुआ तसव्वुर करके अव्वलन सना पढ़ें और इस खयाल के साथ पढ़ें कि हक़ तआ़ला अपनी खास करीमाना शान के साथ मुतवज्जेह है और सुन रहा है।

और फिर खयाल करके कि शैतान हमारे दीन व ईमान का और खास तौर से हमारी नमाज़ों का बड़ा सख़्त दुशमन है, और वह हमारी घात में है और आगे जो कुछ अपने रब से अर्ज करना चाहता हूं वह इस में जरूर खराबी डालने की कोशिश करेगा और सिर्फ अल्लाह तआला ही इस के शर से मेरी हिफाज़त फरमा सकता है। गरज़ अपने आप को शैतान के बचाव से आजिज़ समझ कर उसके शर से अल्लाह तआला की पनाह मांगे और ''अऊजुबिल्लाह'' पढ़े।

पस नमाज़ पढ़ने वाले को चाहिए कि सूरे फातिहा की हर आयत को समझ समझ कर और ठहर ठहर कर इस तसव्वुर के साथ पढ़े कि अल्लाह तआ़ला मेरी सुन रहे हैं और मेरी हर बात का जवाब दे रहे हैं, चुनांचे इय्याक नअ़बुदु व इय्याक नस्तईनु पर पहुंचे और अल्लाह तआला के इस जवाब का ख्याल आए कि ''मेरा बन्दा जो मांगे गा वह उस को मिलेगा, तो यह तसव्वुर करे कि मेरी सब से बड़ी हाजत और सब से अहम जरूरत सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत और दीने हक़ पर चलना है और उस वक़्त अल्लाह तआला से जो मांगा जाएगा वह उसको अता करने का वादा फरमा रहा है दिल की पूरी तड़प के साथ उस रब्बेकरीम से अर्ज करे "इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम सिरातल्लजीना अन्अ़म्त अलैहिम गैरिल मगजूबि अलैहिम् वलज्जाल्लीन (आमीन)

नोटः— हिन्दी में किसी अक्षर पर जबर लगाने के लिए ''आ'' की मात्रा लगाना गलत है जिस पूरे अक्षर पर हलन्त न हो उस को पृथक अक्षर की भांति जबर से पढ़ें।

अरबी का तर्जमा ''ऐ अल्लाह! हम को सीधे रास्ते पर चला उन अच्छे बन्दों के रास्ते पर जिन पर तूने फज़्ल फरमाया, न उन पर जिन पर तेरा गज़ब हुआ और न वह जो गुमराह हुए। (ऐ अल्लाह! मेरी यह दुआ क़बूल फरमा)।

नोटः— यह तर्जुमा सिर्फ खयाल में आए ज़बान पर न आए।

इस के बाद जो सूरत पढ़नी है पढ़े, और यह खयाल करे कि अल्लाह की तरफ से यही मेरी दुआ का जवाब है, जो खुद मेरी

ज़बान से कहलवाया जा रहा है। कुर्आन शरीफ की जो भी छोटी बड़ी सूरत पढ़ी जाए या जहां से भी उस की दो चार आयतें पढ़ी जाएं लाज़िमन उसमें हमारी हिदायत का कोई न कोई सबक होगा, या तो अल्लाह तआला की तौहीद, उस की तस्बीह व तक्दीस और उसकी सिफाते आ़लिया का ज़िक्र होगा या इबादात और अख़्लाक़ का, या मुआमलात व मुआशरत के अच्छे उसूलों की तल्क़ीन होगी, या गुज़िश्ता पैगम्बरों और उनकी उम्मतों के सबक़ आमोज़ वाक़िआत होंगे, गरज़ कुर्आन शरीफ की हर आयत में ज़रूर बिज्जरूर हमारे लिए कोई खास हिदायत होगी। पस नमाज़ी सूरे फातिहा के बाद कुर्आन मजीद की जो भी सूरतें या आयतें पढ़े उन को अल्लाह तआला की तरफ से अपनी दुआ का जवाब समझे और अपने आपको मिस्ले शज–रए–मूसा के तसव्वुर करे (यानी उस दरख्त की मानिन्द जिससे हज़रत मूसा अलै0 ने वादिये तुवा में हक़ तआ़ला का कलाम सुना था) दर हक़ीकत कलामुल्लाह पढ़ने वाले हर मोमिन पर (और बिल्खुसूस नमाज़ में कुर्आन शरीफ पढ़ने वाले मोमिनीन पर) अल्लाह तआ़ला के हजारों बड़े बड़े एहसानात में से एक बड़ा एहसान व इन्आ़म यह भी है कि शज–रए–मूसा वाली सआदते उज़्मा उन को हासिल होती है, यानी अल्लाह तआ़ला के हक़ीक़ी और अज़ली मुक़द्दस कलाम को अपनी ज़बान से अदा करना और दुहराना नसीब होता है।

फिर जब किराअत खत्म कर चुके तो शुक्र के जज्बे से भरे हुए जुल के साथ अल्लाह तआला की वराउलवरा शाने किबरियाई का ध्यान करते हुए और अपने को उसकी इबादत और उसके शुक्र की कमा हक्कहु अदाएगी से कासिर समझते हुए अल्लाहु अकबर कह के रुकूअ करे, और सरे नियाज़ उस के आगे झुकाए और अपनी ज़िल्लत व हिकारत और हक़ तआला की बे इन्तिहा अज़मत व जलालत तसव्वुर करके दिल व ज़बान से बार बार कहे। सुबहाना रब्बियल् अज़ीम (कम से कम तीन बार) पढ़े (पाक है मेरा अज़मत वाला परवरदिगार) तर्जमा खयाल में रहे जबान से न कहे। इसके बाद सर उठाए और कहे "समिअ़ल्लाहुलिमन हमिद् (अल्लाह ने हम्द करने वाले की सुन ली) तर्जमा जबान से न कहे।

यह कलिमा गोया अल्लाह तआला की तरफ से बतौर जवाब के है, जो बन्दे ही की ज़बान से कहलवाया जाता है। मतलब यह है कि बन्दे तेरी हम्द को तेरे रब ने सुन लिया। अल्लाह तआला की तरफ से यह कद्र अफ़ज़ाई और यह बन्दा नवाज़ी मालूम कर के बन्दा को चाहिए कि उसके तमाम ज़ाहिर व बातिन पर हम्द व शुक्र का जज़्बा तारी हो जाए और वह दिल व ज़बान और जिस्म व जान से कहे "रब्बना लकल हम्दु" (ऐ मेरे परवरदिगार! सारी हम्द व

सना तेरे ही लिए है) तर्जमा ज़बान से न कहे।

इसके बाद हक़ तआला की वराउल वरा अज़्मत व किबरियाई और अपनी बे हक़ीक़ी और शुक्र व इबादत का हक़ अदा करने में अपनी आ़जिज़ी और कोताही का तसव्वुर करते हुए दिल व ज़बान से अल्लाहु अकबर कहता हुआ सज्दे में गिर जाए और पेशानी (जो उस के जिस्म का सब से आला और अशरफ हिस्सा है) अल्लाह के हुज़ूर में ज़मीन पर रख कर अल्लाह तआला की बे इन्तिहा अज़्मत व रफअत के सामने अपनी इन्तिहाई ज़िल्लत व पस्ती और बन्दगी व सर अफगन्दगी की अमली शहादत दे, और अल्लाह के बे इन्तिहा जलाल व जबरूत का तसव्वुर कर के अपने को उस का अब्दे ज़लील और खाक पर पड़ा हुआ एक कीड़ा समझते हुए इसी हालत में बार बार दिल व ज़बान से कहे ''सुब्हान रब्बियल अअ़ला'' (बार बार कहे) पाक है मेरा परवरदिगार जो बहुत बरतर और बाला तर है। तर्जमा ज़बान से न कहे।''

फिर अल्लाह तआला की ज़ात को अपने सज्दा से आला व अरफा और अपने सज्दे और अपनी इबादत को उस दरबारे आली की शान के लिहाज़ से निहायत नाकिस और नाक़ाबिले क़बूल समझते हुए नदामत और एतराफे कुसूर के साथ अल्लाहु अकबर कह कर सज्दे से सर उठाये और सीधा बैठने के बाद फिर उसी तसव्वुर व तअस्सुर के साथ अल्लाहु अकबर कह कर दो बारा सज्दे में गिर जाए और उस वक़्त उस का दिल अल्लाह तआला की बे निहायत रफअत व अज़्मत और अपनी इन्तिहाई हिक़ारत व ज़िल्लत के खयाल में डूबा हुआ हो, और उस को हर कमज़ोरी और हर नामुनासिब बात से पाक और अपने को सरासर गन्दगियों और ऐबों का मजमूआ और निहायत हक़ीर और खता कार बन्दा तसव्वुर करते हुए फिर बार बार दिल व ज़बान से कहे ''सुब्हान रब्बियल अअ़ला''

फिर यह तसव्वुर करते हुए कि अल्लाह तआला की शान हमारे इन सज्दों और हमारी इबादात से बहुत बालातर और बरतर है, अल्लाहु अकबर कहता हुआ खड़ा हो जाए और जिन तसव्वुरात के साथ पहली रक्अत पढ़ी थी दूसरी रक्अत पूरी करे और मजकूरा तफ़्सील के मुताबिक रुकूअ़ व सुजूद करे। गरज हर रक्अत में इसी तरह करे, फिर जब बैठ कर तशह्हुद पढ़ने का वक़्त आए तो दिल को पूरी यक्सूई के साथ मुतवज्जेह कर के तशह्हुद पढ़े तशह्हुद हिन्दी में लिखना मुश्किल है इसको किसी नमाज़ की किताब में देख लें। जिस का तर्जुमा यह है ''अदब व ताज़ीम के सारे कल्मे अल्लाह ही के लिए हैं और तमाम इबादात और तमाम सद्क़ात अल्लाह ही के लिए हैं, सलाम हो तुम पर ऐ नबी और रहमत अल्लाह की और उस की बरकतें, सलाम हो हम पर और

अल्लाह के सब नेक बन्दों पर, मैं शहादत देता हूं कि कोई क़ाबिले इबादत नहीं सिवा अल्लाह के, और शहादत देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और उसके पैगम्बर हैं। तर्जमा ख्याल में लाएं जबान से न कहें।

और क़अ्–दए–अखीरा में तशह्हुद पढ़ने के बाद यह खयाल करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद शरीफ पढ़े कि इस दरबारे खुदावन्दी तक हमें रसाई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहनुमाई से हासिल हुई है और हमारा ईमान व इस्लाम और अल्लाह तआला के साथ हमारा तअल्लुक़ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की तब्लीगी कोशिशों का नतीजा है और आप ही हमारे हादिये अव्वल हैं, और अल्लाह तआला ही हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस हिदायत व रहनुमाई का और इस सिलसिले की तक्लीफों और मुसीबतों का बदला दे सकता है। लिहाजा दुआए रहमत यानी दुरूद की शक्ल में आप के एहसान का एतराफ किए बगैर अल्लाह तआला से अर्ज व मारूज़ के इस सिलसिले को खत्म कर देना बड़ी बे मुरव्वती और एहसान फरामोशी है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहा–बए–किराम रज़ि0 को जो दुरूद शरीफ तालीम फरमाई थी, हिन्दी में सही अरबी लिखना मुश्किल है इसलिए इस को किसी नमाज़ की किताब में देख लें मगर नमाज़ में इसको अरबी ही में पढ़ें, उस का तर्जुमा यह है ''ऐ अल्लाह! हज़रत मुहम्मद पर और उनकी आल पर यानी उनके मुतअल्लिक़ीन पर अपनी खास रहमत नाज़िल फरमा जैसे तू ने हज़रत इब्राहीम और आले इब्राहीम पर रहमत की, तू क़ाबिले हम्द है और साहिबे मज्द है। ऐ अल्लाह! हज़रत मुहम्मद पर और उनकी आल पर बरकतें नाज़िल फरमा जैसे कि तूने हज़रत इब्राहीम और आले इब्राहीम पर बरकतें नाज़िल की तू क़ाबिले हम्द है और साहिबे मज्द है।

दुरूद शरीफ पर गोया नमाज़ पूरी हो गई मगर इस नमाज़ को अल्लाह तआला की शाने आली के लिहाज से निहायत नाक़िस और नाक़ाबिले एतिबार समझते हुए और इस बारे में अपने को सरा सर कुसूरवार और खताकार तसव्वुर करते हुए अपने अन्दर खौफ़ और दिल शिकस्तगी की कैफीयत पैदा करे और निहायत इल्हाह और तज़र्रुअ् के साथ हक तआला से अर्ज करे।

''अल्लाहहुम्म इन्नी जलम्तु नफ्सी जुल्मन कसीरव व ला यग़फिरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त फग़फिर्ली मग़फिरतम्मिन् अि़न्दिका वरहम्नी इन्नक अन्तल् गफूर्रुहीम''।

नोटः– हिन्दी में लिखी हुई अरबी किसी जानकार से पढ़ना जरूरी है हिन्दी का पूरा अक्षर अगर उस पर हलन्त न हो तो पृथक अक्षर की भांति जबर से पढ़ें।

तर्जमाः "ऐ अल्लाह! मैंने अपने नफ़्स पर बड़ा जुल्म किया मैं सख़्त कुसूरवार हूँ और सिर्फ तू ही गुनाहों को मुआफ करने वाला है, पस तू मुझे मुआफी दे दे महज अपने फज़्ल से और मुझ पर रहम फरमा, यक़ीनन तू बख़्शने वाला और मेहरबान है। नमाज़ में तर्जमा के अलफ़ाज़ ज़बान से न कहें।

यह दुआ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ि0 को उनकी दरख्वास्त ही पर पढ़ने के लिए तालीम फरमाई थी।

(सहीह–बुखारी)

इस दुआ व इस्तिगफार ही को अपनी नमाज़ का खातिमा बनाएं, और उस के बाद सलाम के ज़रीये नमाज़ खत्म कर दे। दाहिनी जानिब के सलाम में दाहिनी जानिब के रुफकाए नमाज़ और फरिश्तों की नीयत करे और बाईं जानिब के सलाम में उस जानिब वालों की। और इमाम जिस जानिब हो उस की नीयत उसी जानिब के सलाम में करे।

यह ज़ाहिर है कि सलाम का अस्ल मौका इब्तिदाए मुलाक़ात है, यानी जुदा होने के बाद जब दो मुसलमान मिलें तो उन्हें सलाम का हुक्म है पस नमाज़ के खत्म पर दो तरफा सलाम की मशरूईयत में हमारे लिए इशारा है कि हम पूरी नमाज़ में इस क़द्र यक्सूई के साथ अल्लाह तआला की तरफ मुतवज्जेह और उससे मुनाजात और अर्ज़ मारूज़ में ऐसे गर्क रहें कि अपने गिर्द व पेश की दुन्या से भी हत्ता की अपने साथ के फरिश्तों से भी मुन्क़ता और गायब हो कर गोया किसी दूसरे ही आलम में हैं और नमाज़ के खत्म पर गोया उस आलम से पलट कर ताज़ा मुलाक़ात करते हैं और दाएं बाएं के रफीक़ों और फरिश्तों को सलाम करते हैं।

सलाम फेरने के बाद फिर खयाल करे कि मेरी यह नमाज़ बहुत नाकिस हुई और अल्लाह तआला महज़ अपने करम से मुआफ न फरमाए तो मैं इस पर सज़ा का मुस्तहिक़ हूं, बहर हाल यह खयाल कर के शर्म व नदामत और खौफ के जज़्बा के साथ अपनी नमाज़ की कोताहियों और दूसरी आम मअ़सियतों से मुआफी मांगे और अफ्वु व दरगुज़र की इल्तिजा करे। हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलाम फेरने के बाद तीन दफा ऐसी आवाज़ से "अस्तग़फिरुल्लाह" कहते थे कि पीछे के लोग भी आप के इस इस्तिगफार को सुन लेते थे।

कुर्आन मजीद में अल्लाह तआला के खास और मक़बूल बन्दों की यह सिफत बयान की गई है।

तर्जमाः "कि वह रातों को बहुत कम सोते हैं बल्कि रातों का ज़ियादा हिस्सा अल्लाह की इबादत और उसकी याद में गुज़ारते हैं और फिर सहर के वक़्त उस से मुआफी मांगते हैं

(अज्जारियातः 17–18)

गोया रात भर की इबादत के बाद भी अपने को कुसूरवार और खताकार गरदान्ते हुए अपने मालिक व मौला से अपने गुनाहों और

अपनी खताओं की मुआफी ही चहते हैं। बहर हाल ईमान वालों का यही हाल होना चाहिए कि अपनी तरफ से अच्छी नमाज़ पढ़ने की कोशिश करें और सलाम फेरने के बाद अपने कुसूर और अपनी कोताहकारी का एतराफ करते हुए अल्लाह तआला से मुआफी चाहें, इससे बख्श देने की इल्तिजाएं करें। और उस के बाद अल्लाह तआला से जो चाहें दुआएं मांगे।

नमाज़ की कैफीयात और दौराने नमाज़ के जज़्बात व तसव्वुरात के मुतअल्लिक़ जो कुछ यहां तक अर्ज किया गया है अगर चे वह इस सिलसिले की इन्तिहाई बातें नहीं हैं, बल्कि ज़ियादा तर उमूमी और अवसत दर्जे ही की चीजें हैं, ताहम आजकल के हालात में जब कि हमारी नमाजें उमूमन सिर्फ जाहिरी और रस्मी ही रह गई हैं और उनमें से रूह निकलती जा रही है, अगर हम इस दर्जे की नमाज़ें पढ़ने की भी कोशिश करें तो हमारी रूहों की पाकीजगी, हमारी सीरतों की दुरूस्ती और हमारे हालात में निहायत आला तब्दीली यकीनी है। कुर्आन मजीद में नमाज़ की जो यह तासीर बतलाई गई है कि मसलन वह बुरे कामों और गन्दी बातों से आदमी को रोक देती है।

(सूरः अल अंकबूतः45)

या मसलन यह कि वह आदमी से गुनाहों की गन्दगी को धो कर उस को पाक व साफ कर देती है।

(हूदः 114)

या मसलन यह कि वह आदमी को फलाह से हमकनार कराती है।

(अलमोमिनूनः1)

या मसलन यह कि नमाज़ की वजह से बन्दा अल्लाह तआला की खासुल खास इनायात हत्ता की मुकामे मईयत का मुस्तहिक़ हो जाता है। (माइदाः12) या मसलन यह कि नमाज़ सख़्त से सख़्त मासाइब व मुश्किलात का इलाज और अल्लाह तआला की खास पनाह का दाइरा है। "वस्तअ़ीनू बिस्सब्रे वस्सलात"

(अल बकराः 153)

और हदीस में आया है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई मुश्किल पेश आती तो वह नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाते।

या मसलन अल्लाह तआला नमाज़ पढ़ने वाली कौम को अपनी खास मदद के ज़रिये फत्ह और गल्बा देता है और उस के दुश्मनों को तबाह व बरबाद कर देता है "फसल्लि लिरब्बिक वन्हर, इन्न शअ़निअक हुवल अब्तर"। (अलकौसर)

गरज़ नमाज़ की इस किस्म की जितनी तासीरें कुर्आन मजीद या अहादीस में वारिद हुई हैं, सो यह उन्हीं खुशूअ व हुजूर वाली नमाज़ों की तासीरें हैं, जो कम अज कम मजकू–रए–सद्र कैफीयात व जज़्बात के साथ अदा की जाएं, और यही नमाज़ें हैं जो मेराजुल मोमिनीन का मिस्दाक़ होती हैं, वरना जिस तरह की खुशूअ व हुजूर से खाली नमाज़ें आम तौर से हम पढ़ते हैं, चाहे अहकामे जाहिर के लिहाज़ से हम यह न कह सकें कि यह नमाज़ें

नहीं होतीं। लेकिन इस में शुब्हा नहीं कि यह नमाज़ें बेजान और बेरूह हैं।

इमामे अहमद रह0 अपने रिसाला ''अस्सलातु वमायलज़िमुहा'' में फरमाते हैं, तर्जमाः हदीस में आया है कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि वह बज़ाहिर नमाज़ें पढ़ेंगे, लेकिन दर हक़ीक़त नमाज़ें न पढ़ते होंगे।

बहर हाल नमाज़ के ज़ाहिरी अरकान कयाम, किराअत रुकूअ़ व सुजूद वगैरा के अलावा खुशूअ व हुजूर की कैफीयत को भी नमाज़ में गैर मामूली अहम्मीयत हासिल है और बजा तौर पर कहा जा सकता है कि यही बातनी कैफीयत नमाज़ की रूह और उसकी जान है और इसी पर नमाज़ की मक़बूलीयत और महबूबीयत का दारोमदार है और यही चीज़ आदमी को खुदा से क़रीब करती है और उस की खास रहमतों और नेमतों का मुस्तहिक़ बनाती है।

जारी........

अपनी कहानी.......

सन् 1985 ई0 के आखिर में मैं वतन आ गया और सन् 1986 ई0 में फिर नदवे से तअल्लुक़ पैदा किया, सन् 1987 ई0 से माहद का हेडमास्टर रहा, लेकिन जब माहद नदवे से सिकरोरी भेज दिया गया तो मेरी सुहूलत के लिए मुझे मुआ़विन नाज़िर शोबा तामीर व तरक़्क़ी के मनसब पर मुक़र्रर किया गया ताकि मेरा क़ियाम दारूल उलूम में रह सके।

सन् 2002 ई0 में जब नदवतुल उलमा की जानिब से एक हिन्दी माहाना सच्चा राही जारी किया गया तो मुझे उसका एडीटर बनाया गया यह खिदमत अब तक जारी है।

मज़ीद अल्लाह का फज़्लः–

मौलाना मोहम्मद हमज़ा हसनी साहिब की तवज्जो से अल्लाह तआ़ाला ने मुझ से दावतो इरशाद का जो काम लिया उसकी तफ़्सील में जाना अपनी खुद सिताई है इसलिए उसको नज़र अन्दाज़ करता हूँ।

यहां इस बात के जिक्र में कोई हर्ज़ नहीं कि हज़रत मौलाना मोहम्मद अब्दुश्शकूर फारूक़ी रह0 के इन्तिक़ाल के बाद हज़रत मौलाना अली मियां रह0 के हुक्म से सहारनपुर जा कर हज़रत शेख़ मौलाना मोहम्मद ज़करिया रह0 से बैअ़त हुआ था और अब मेरा तरबियती तअल्लुक़ हज़रत मौलाना सय्यिद मोहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम से है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि जब तक ज़िन्दा रहूं इस्लाम पर रहूं और जब ज़िन्दगी खत्म हो तो ईमान पर ख़ातिमा हो, अल्लाह तआला ने मुझे बड़ा खानदान दिया है। अल्लाह तआला इन सबको दीन पर क़ाइम रखे।

आमीन!

आपके प्रश्नों के उत्तर?

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक कमीशन एजेन्ट है जो बेचने वाले से भी कमीशन लेता है और खरीदने वाले से भी कमीशन लेता है, क्या यह सूरत जाइज है?

उत्तरः एजेन्ट की हैसियत अस्ल में वकील व दल्लाल की होती है और वकालत की उजरतली जा सकती है, तो अगर वह बेचने वाले के लिए काम कर रहा था तो सिर्फ उसी से उजरत ले सकता है खरीदार से नहीं, हाँ! अगर कोई एजेंसी इस बात के लिए काइम हो कि वह ताजिर और ग्राहक दोनों के लिए काम करती हो तो वह दोनों ही से उजरत ले सकती है, अल्लामा शामी रह0 ने इस की सराहत की है।

(रद्दुल मुखतारः4/42)

प्रश्नः बेशुमार मुसलमान पतंगों और पटाखों का कारोबार करते हैं, क्या ऐसे कारोबार करना मुसलमानों के लिए जाइज़ है?

उत्तरः पतंग उड़ाने में अगर हार जीत की शर्त लगाई जाए तो जुआ होने की वजह से हराम है। (अलदुर्रुलमुखतार अला हामिश रद्दुल मुहतारः 1/577) अगर शर्त न हो और नमाज़ें पतंग बाज़ी में इन्हिमाक की वजह से फौत न हों तो गुंजाइश है।

(अलदुर्रुलमुखतार अला हामिश रद्दुल मुहतारः 1/579)

ज़ियादा से ज़ियादा उस के कारोबार को खिलाफे औला कहा जा सकता है, मगर कारोबार की गुंजाइश है, इसी तरह पटाखे ज़ियादा कीमती हों तो फुजूल खर्ची के दायरे में आ जाएंगे, अगर मामूली कीमत के हों और इस तरह न छोड़े जाएं कि लोगों को तकलीफ पहुंचे तो इनका कारोबार भी जाइज़ होगा अगरचे खिलाफे औला होगा नीज शरीअ़त के फुरूई अहकाम के मुखातब मुसलमान हैं न कि गैर मुस्लिम और इन चीजों को ज़ियादा तर गैर मुस्लिम हज़रात ही खरीदते हैं, इस लिए मुसलमानों के लिए इस कारोबार की गुंजाइश है लेकिन बचना बेहतर है।

प्रश्नः अगर कोई शख्स मैरेज हाल (शादी घर) बनवाए और किराये पर लगाए तो यह दुरुस्त है या नहीं? यह सवाल इस वजह से है कि उसे मुस्लिम व गैर मुस्लिम किराया पर लेते हैं इसी तरह आज़ादाना तौर पर मर्दों और औरतों का इख्तिलात होता है, तो क्या इस्लामी शरअ़ में इस हाल को किराया पर लगाना और उस की आमदनी दुरुस्त है?

उत्तरः मैरेज हाल बनाना और उसको किराये पर चलाना फी नफ्सिही जाइज़ है, फिर भी मालिक को चाहिए कि वह किराये के लिए ऐसे उसूल व जाबिते बनाए जिन की वजह से शरीअत के खिलाफ बातें न हों सकें, इस पर भी कोई शरीअ़त के खिलाफ हरकतें करेगा तो मालिक गुनहगार नहीं होगा, और किराये की आमदनी दुरुस्त होगी।

(फतावा हिन्दीयाः 4/42)

प्रश्नः क्या किसी मुसलमान के लिए यह जाइज़ है कि वह दौराने ड्यूटी बगैर मालिक की इजाज़त से अपना जाती

काम या तफ्रीह या कोई दूसरा काम अपनाए?

उत्तरः अगर मुलाज़मत ठेके जैसे काम की है कि इतना काम करना होगा, तो खाली वक़्त में ज़ाती काम करना या तफ्रीह या कोई शुग्ल अपनाना जाइज़ है, और अगर वक़्त की मुलाजमत है तो ड्यूटी के दौरान जाती काम या तफ्रीह वगैरा में मशगूल होना जाइज़ नहीं है, सिवाए इसके कि मालिक की तरफ से इजाज़त हो।

(फतावा हिन्दीयाः 4/416)

प्रश्नः लारी, बस या किसी भी गाड़ी की जद में आ कर कोई आदमी मर जाए तो अदालत की तरफ से मरने वाले के वरसा को जो रकम दिलाई जाती है, उस रकम का लेना शरअन जाइज़ है या नहीं?

उत्तरः इस्लामी शरीअत में क़त्ल की मुख्तलिफ सूरतों के अलग अलग अहकाम हैं, उन में क़त्ले खता भी है, मजकूरा सूरत में अगर गलती गाड़ी चालाने वाले की है तो उस पर "दियत" जो क़त्ले खता के जुर्म में आती है जिसमें शरअन दियत सौ ऊँट मुकर्र की गई है, जिस की अच्छी खासी कीमत होती है, लिहाजा अदालत अगर कुछ रकम दिलाए तो मकतूल के वरसा के लिए उसका लेना और इस्तेमाल करना दुरुस्त है, इसमें कोई खराबी नहीं।

(अलहिदायाः 4/559)

प्रश्नः अगर कोई शख्स गेस्ट हाउस बनाए, उसमें बाहर से आने वाले कुछ अफराद भी ठहरते हैं लेकिन अक्सर व बेश्तर शहर के अय्याश लोग आ कर रूम बुक करवाते हैं, और तीन चार घंटे रह कर चौबीस घंटे का किराया अदा करते हैं, तो ऐसा गेस्ट हाउस बनाना और उस से कमाई करना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः गेस्ट हाउस बनाना और उस में ठहरने का किराया लेना दुरुस्त है, अलबत्ता उस के मालिक के लिए यह ज़रूरी है कि वह ऐसा इन्तिज़ाम करे कि वहां गैर शरई हरकतें न हो सकें, इस इन्तिज़ाम व कोशिश के बावजूद अगर आने वाले गैर शरई हरकतें करें तो मुसाफिरखाना वालों पर गुनाह नहीं होगा, और किराये की आमदनी जाइज़ होगी।

(रद्दुल मुहतारः 1/37)

प्रश्नः एजुकेशन लोन लेना कैसा है?

उत्तरः सूद थोड़ा हो या ज़ियादा उस का लेना व देना दुरुस्त नहीं, अलबत्ता अगर कोई खास तालिबे इल्म किसी आला तालीम (उच्च शिक्षा) का अहल हो और उसके पास इतने पैसे नहीं हैं कि वह कर्ज लिए बगैर आला तालीम हासिल कर सके और कहीं से उसको इस गरज़ के लिए गैर सूदी कर्ज न मिल सके तो उसके लिए किसी मुफ़्ती से मशवरा कर के एजुकेशन लोन लेना दुरुस्त है क्योंकि हाजत के मौक़े पर इस तरह का कर्ज लिया जा सकता है।

(अल इशबाह वन्नजाइरः294)

प्रश्नः क्या कोई मुसलमान बैंक और इन्श्योरेंस कम्पनी में मुलाज़मत कर सकता है?

उत्तरः बैंक बुन्यादी तौर पर सूदी कारोबार करता है सूद पर अपना सरमाया लगाता है और अपने खातादारों को सूद अदा करता है, इसी तरह इन्श्योरेंस कम्पनी में

तक़रीबन तमाम सूरतों में जुआ पाया जाता है और बाज़ सूरतों में जुए के साथ साथ सूद भी पाया जाता है, इसलिए बैंक और इन्श्योरेंस कम्पनी में मुलाज़मत जाइज़ नहीं, यह गुनाह में तआवुन है, और अल्लाह तआला ने गुनाह में तआवुन से मना फरमाया है। (अलमाइदा:2) अलबत्ता बैंक के चौथे दर्जे की मुलाजमत जिस में मुलाजिम को लिखना पढ़ना, हिसाब किताब करना पैसों का लेना देना वगैरा नहीं करना पड़ता है, जैसे गार्ड और चपरासी वगैरा की मुलाज़मत है तो उसकी गुन्जाइश है।

प्रश्न: क्रेडिट कार्ड का क्या हुक्म है, खास कर ऐसी सूरत में जब मुकर्ररा मुद्दत के अन्दर पैसा अदा कर दे और सूद देने की नौबत न आए?

उत्तर: क्रेडिट कार्ड में शरई नुक–तए–नज़र से दो बुन्यादी मफासिद हैं एक यह कि उससे फुजूल खर्ची का रुजहान पैदा होता है, आदमी अपनी सलाहीयत से बढ़ के खरीदारी करने लगता है और शरीअत में फुजूल खर्ची को मना किया गया है दूसरे यह कि जो खरीदार मुद्दते मुकर्ररा के अन्दर पैसा अदा कर दे और सूद देने की नौबत न आए लेकिन मुआहिदा में यह बात शामिल होती है कि अगर मुद्दते मुकरर्रा में पैसे अदा नहीं किए गए तो सूद देना होगा, लिहाजा चाहे खरीदार सूद के अमल में मुलौविस न हो लेकिन सूदी मुआमिला करने में मुलौविस होगा, दूसरी तरफ यह भी एक हक़ीक़त है कि क्रेडिट कार्ड से जो जाइज़ फाइदे हासिल किए जा सकते हैं वह डेबिट कार्ड से भी हासिल किये जा सकते हैं, लिहाजा डेबिट कार्ड से इस ज़रूरत को पूरा कर लिया जाए, हां अगर कानूनी मजबूरी हुई तो उस वक़्त उस की गुन्जाइश हो सकेगी।

(देखिए अलफुरकान :67, अलबकरा: 275)

प्रश्न: एक कम्पनी हुकूमत के कवानीन के मुताबिक प्राविडेन्ट फन्ड के नाम पर मुलाजिम की तन्ख्वाह से कुछ हिस्सा काट लेती है फिर उस काटी हुई रकम से किसी फाइनेंस कम्पनी में सरमायाकारी करती है, फिर कम्पनी से अलाहिदगी के वक़्त मुलाजिम को इज़ाफे के साथ रकम दी जाती है, क्या इस का लेना दुरुस्त है?

उत्तर: कम्पनी ने मुलाज़िम की तन्ख्वाह में से कुछ रकम वज़ा कर लिया (काट लिया) और कुछ रक़म अपनी तरफ से इज़ाफा कर के दिलाया तो यह जाइज़ है, यह इज़ाफा शुदा रक़म सूद नहीं है बल्कि यह उजरत में दाखिल है जो मुलाज़िम की मेहनत के बदले दी जा रही है, जो रक़म कम्पनी ने वजा कर ली वह अभी मुलाज़िम की मिल्क में दाखिल ही नहीं हुई, यह अभी कम्पनी के जिम्मे देन है, और ज़ाइद रक़म इस की तरफ से उजरत या अतीया है। (फतावा हिन्दीया: 3/117)

प्रश्न: प्राविडेन्ट फण्ड का जो हिस्सा लाज़मी तौर पर वजा किया जाता है, बाज़ मुलाज़िमीन उस के अलावा भी मजीद अपने इख्तियार से वजा कराते हैं और अलाहिदगी के वक़्त इस इख्तियारी वज़ा करदा रकम पर भी इज़ाफी रक़म हासिल होती है, इसका क्या हुक्म है?

उत्तरः जो रक़्म इख़्तियारी तौर पर मुलाज़िमीन कम्पनी के हवाले करते हैं, इस पर दी जाने वाली इजाफी रक़्म सूद में शामिल है क्योंकि एक ऐसी रक़्म जो मुलाजिम की मिल्कीयत में आ चुकी है और जिसका ले लेना मुलाज़िम के इख़्तियार में है, उस मुलाज़िम ने कम्पनी को यह कह कर हवाला किया कि वह उसे एक मुद्दत तक अपने पास रखे और बाद में इज़ाफे के साथ वापस कर दे। इस्लामी शरअ में इसी को सूद कहते हैं, जो हराम है। कुर्आन मजीद में आया है, अनुवादः "ऐ ईमान वालो! सूद कई कई हिस्सा बढ़ा कर न खाओ, और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम फलाह पा जाओ।"
(सूरेः आले इमरानः130)

दूसरी जगह आया है अनुवादः "ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और जो कुछ सूद का बक़ाया है उसे छोड़ दो, अगर तुम ईमान वाले हो लेकिन तुम ने ऐसा न किया तो खबरदार हो जाओ जंग के लिए अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से।"

(अल बकराः 278—279)

प्रश्नः अगर नमाज़ में सूरे फातिहा के बजाए उस का तर्जमा फारसी या किसी और ज़बान में पढ़ दिया जाए तो नमाज़ होगी या नहीं? इसी तरह अगर रुकूअ़ व सुजूद की तस्बीहात का फारसी में तर्जमा पढ़ दिया जाए या तशह्हुद व दुरूद का तर्जमा फारसी या हिन्दी में पढ़ दिया जाए तो नमाज़ होगी या नहीं?

उत्तरः नमाज़ में अरबी ज़बान में किराअत करना ज़रूरी है ख्वाह सूरे फातिहा हो या कोई सूरत, इसलिए बक़द्र अदाए नमाज़ कुर्आन मजीद सीख लेना जरूरी है, और इसमें न कोई दुशवारी है और न ज़ियादा वक़्त की ज़रूरत। अब अगर कोई सूरे फातिहा या कोई और सूरत या तशह्हुद या दुरूद अरबी ज़बान के अलावा किसी भी ज़बान में पढ़ता है तो नमाज़ दुरुस्त नहीं होगी। इसी तरह नमाज़ की तमाम तस्बीहात को अरबी ज़बान में पढ़ना ज़रूरी है अब अगर कोई गैर अरबी मसलन उर्दू व फारसी अंग्रेजी वगैरा में पढ़ता है तो उसकी नमाज़ नहीं होगी इसलिए कि पूरी की पूरी नमाज़ अरबी ज़बान में है किसी दूसरी ज़बान की गुन्जाइश ही नहीं है।
(दुर्रेमुख्तार, रद्दुलमुहतारः 1/446)

प्रश्नः एक आक़िल बालिग मुसलमान नमाज़ नहीं पढ़ता था, लेकिन अब समझाने बुझाने पर नमाज़ पढ़ने को तैयार हो गया है मगर अफ्सोस उस को न तो कोई सूरे याद है न तशह्हुद न दुरूद न नमाज़ की तस्बीहात ऐसे शख्स से नमाज़ किस तरह पढ़वाई जाए?

उत्तरः ऐसे शख्स को चाहिए कि "सुब्हानल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अकबर के जरिये नमाज़ पढ़े लेकिन जल्द से जल्द उस पर, कुर्आन मजीद में से फर्ज क़िराअत की मिक़्दार याद करना फर्ज़ और वाजिब की मिक़्दार याद करना वाजिब है, और याद न करने पर सख्त गुनहगार होगा। (आलम गीरीः 1/49)

नोटः उसको चाहिए कि सूरतुल फातिहा और दो छोटी सूरतें जल्द याद कर ले।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

क्या हम नबीये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे पैरो हैं?

–मौलाना जाफर मसऊद नदवी–   –हिन्दी लिपिः उबैदुल्लाह मतलूब सिद्दीक़ी

जब कि क़ैसरो किसरा नर्म व मख़्मली गद्दों पर आराम कर रहे हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, उनके लिए सिर्फ यही दुन्या है हमारे लिए आख़िरत।

घर में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वक़्त कैसे गुज़रता था? वह भी हजरत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 की जुबानी सुनिए, फरमाती है ''आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सख़्त मिज़ाज शौहरों की तरह नहीं थे, अपने कपड़े खुद ही धोते, खुद ही अपनी चप्पल टांक लेते, खुद बकरी का दूध दुह लिया करते थे, और घर में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी तरह काम काज करते थे, जिस तरह दूसरे तमाम मर्द अपने घरों में काम करते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाया करते थे ''तुम में सबसे बेहतर वह है जो अपने घर वालों के लिए बेहतर हो, और मैं अपने घर वालों के लिए तुम सब से बेहतर हूं। मदीना मुनव्वरा में एक सहाबी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 शादी करते हैं, ना निकाह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पढ़वाते हैं और ना निकाह की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला देते हैं, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ना बुरा माना और ना ही नागवारी का इज़हार किया, बल्कि वलीमा की तल्क़ीन कर के इस्लाम में वलीमा की अहमियत बताते हुए ज़रूर कहा कि ऐ अब्दुर्रहमान! निकाह में तो तुम भूल गये, वलीमा में ना भूल जाना।

बच्चों के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रवय्या इतना महब्बत आमेज़ होता था कि बच्चे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गिरवीदा हो जाते थे, बच्चों से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत प्यार फरमाते थे, खुद ही उनको सलाम करते, उनके सरों पर हाथ फेरते, उनके दरमियान कभी कभी मुक़ाबिला करवाते, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफर से तशरीफ लाते तो घर के बच्चे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस्तिक़बाल करने दौड़ते, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी को प्यार करते किसी को अपनी सवारी पर पीछे बिठा लेते, किसी को हाथों पर उठा लेते और गोद ले लिया करते।

गरीबों, कमज़ोरों, मरीज़ों से मिलने खुद जाते और उनके ग़म के इज़ाले की तदबीरें करते, उनकी परेशानियों और तकलीफों पर अज्र व सवाब की उम्मीद दिला कर उनके एहसासात को बदलने

की कोशिश करते।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस वलीमा को बदतरीन वलीमा क़रार दिया जिस वलीमा में तो अमीरों को दावत दी जाए और ग़रीबों को मिस्कीनों को नज़रअंदाज कर दिया जाए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं मिस्कीनों से महब्बत करता हूं।

कोहे सफ़ा पर चढ़ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ''वा सबाहाहु–2'' की सदा लगाते हैं, आप की आवाज़ पर लोग जमा होते हैं, क्योंकि यही तरीक़ा था उस वक़्त लोगों को जमा करने का फिर आप उनके सामने वह बात रखते हैं जिस का हुक्म आपको आसमान से मिला था, बात मुंह से निकली कि अबू लहब ग़ुस्से से भड़क उठता है और चीख़ कर कहता है ''तेरे हाथ टूटें! क्या इसी लिए तू ने हम को जमा किया था''

ज़बान मुबारक खामोश रहती है, गुस्से का कोई इज़हार नहीं, जुबान पर कोई सख़्त बात नहीं, सिर्फ सदमा है, फिक्र और अफसोस है, अबूलहब के इनाद और सरकशी पर, लेकिन यही ख़ामोशी अपना असर दिखाती है जवाब उसका आसमान से आता है ''अबूलहब के दोनों हाथ टूट गये और वह बर्बाद हो गया'' का नुजूल होता है, अबूलहब की दुन्या व आखिरत दोनों जगह हलाकत का एलान कर दिया जाता है।

ताइफ की गलियां हैं, आगे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, और पीछे कुफ़्फ़ार के लगाए हुए शरपसन्द औबाश लड़के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पत्थर बरसाते जा रहे हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जुम्ले कसते जा रहे हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ठठ्ठे लगाते जा रहे हैं, क़दम मुबारक लहूलहान हो चुके हैं, दिल की कैफियत का तो पूछना ही क्या लेकिन जुबान पर ऐसा क़ाबू और जज़्बात पर ऐसा कन्ट्रोल कि अ़क्ल हैरान रह जाए, ना जुबान से कोई सख़्त लफ़्ज़ निकलता है और ना बद दुआ के लिए हाथ उठता है, फरिश्ता मुन्तज़िर है कि इजाज़त हो तो पहाड़ों को मिला कर उन सरकशों का सुरमा बना दिया जाये, लेकिन उस मौक़े पर भी जुबान मुबारक से जो कलमात निकलते हैं वह महब्बत में डूबे हुए और रहमत में गुंधे हुए हैं और जो अल्फ़ाज़ कहते थे उसका तर्जुमा है ''ऐ अल्लाह मेरी क़ौम को हिदायत अता फरमा वह जानती नहीं।

मक्का फतह हो रहा है, दुश्मन से इन्तिक़ाम लेने का इससे बेहतर कोई मौक़ा नहीं, तलवारें इशारे की मुन्तज़िर हैं, कब से आरजू थी इन तलवारों को मुनकिराने खुदा और बाग़ियाने रसूल का सर क़लम करने की, लेकिन ऐलान होता है आम मुआफी का, तलवारों का सर झुक जाता है और नियाम में उनको वापस आना पड़ता है।

बद्र के क़ैदी खिदमत में पेश किये जाते हैं, वह क़ैदी जिनके सीनों में नफरत की आग और आंखों में नफरत के शोअ़ले हैं, सहा–बए–किराम रज़ि0 तशरीफ फरमा हैं, मशवरा होता है, हज़रत उमर फारूक़ रज़ि0 की राय है कि यही मौक़ा है कि खुदा के रिश्ते के मुक़ाबले में हर रिश्ते को कुरबान कर देने का, हुक्म दीजिए कि जिनका रिश्ता सबसे ज़ियादा करीब हो वह बढ़े और दुश्मने इस्लाम का सर तन से जुदा कर दे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खामोशी इख़्तियार फरमाते हैं और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 से राय दरयाफ्त करते हैं और फिर दुश्मनाने इस्लाम की जान बख़्शी का फैसला फरमा देते हैं इस शर्त के साथ कि वह फिदया देंगे और जो उनमें से तालीम याफ़्ता हैं वह मुसलमानों को लिखना पढ़ना सिखांएगे।

और आगे बढ़िये, तलवार को छोड़िये, तलवार तो बड़ी चीज़ है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुखालिफीन व मुआ़निदीन आज तक यह भी साबित ना कर सके कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के किसी दुश्मन को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के किसी जुम्ले से तकलीफ हुई है, अपने और पराये सब का इस बात पर इत्तफाक़ है कि ना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी खादिम को मारा ना किसी खातून पर हाथ उठाया और ना किसी बच्चे को डांटा, इंसान को छोड़िये जानवरों तक से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अच्छा मुआ़मला करने का हुक्म दिया, दूध दुहने वालों से कहा कि अपने नाखून कतर लिया करो ताकि दूध दुहने के दौरान थन में वह नाखुन चुभें नहीं, जब्ह करने वालों को हुक्म दिया कि छुरी तेज़ कर लें ताकि जब्ह होते हुए जानवर को देर तक छुरी चलने से तकलीफ न हो, ऊँट कमज़ोर और लाग़र देखा तो मालिक की सरजनिश की कि पूरी खुराक क्यों नहीं देते, बेज़रूरत चिड़ियों का शिकार करने से मना फरमाया, जानवरों पर ताक़त से ज़ियादा बोझ लादने पर नकीर फरमाई और फरमाया कि चरिन्द व परिन्द पर की जाने वाली जियादतियों पर भी क़यामत में सवाल होगा।

जानवरों को भी जाने दीजिए, खाना जिसमें ना जान है ना हिस, बदमज़ा होने के बावजूद कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खाने की बुराई नहीं की और अगर खाने का लुक़्मा किसी से गिर भी गया तो उसको साफ़ करके दोबारा खाने की तलक़ीन फरमाई, और लुक़्मा तो फिर भी लुक़्मा है खाने के एक जर्रा और एक एक दाना का आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एहतिराम किया और अपने पैरोकारों को ये कह कर प्लेट साफ करने की तलक़ीन की कि मालूम नहीं किस दाने में बरकत हो, हाथ धोने से पहले उंगली चाटने का हुक्म दिया ताकि

बरकत ना जाए और खाने की ये गिज़ा पानी के साथ बह कर गन्दी नालियों में ना जाएं, यह है आलम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहमतुल्लिलआ़लमीन का।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो गरीब बच्चियों की किफालत करने वाले को यह बशारत दी कि वह और मैं इतने क़रीब होंगे जितनी मेरी यह दो उंगलियां और फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दोनों उंगलियों को मिला कर दिखाया।

अब आइये एक नज़र डालते हैं नबी आखिरुज्जमां मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आखिरी हिदायात बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वसीयत पर, जरा सोचिये दिल पर हाथ रख के, किस की वसीयत है? किस को की जा रही है? किस मौक़े पर की जा रही है? एक बाप वसीयत करता है तो औलाद के लिए उससे ज़ियादा शर्म की बात और कोई समझी नही जाती कि औलाद ने अपने बाप की वसीयत पर अमल नहीं किया, चेजाय कि वसीयत करने वाली ज़ात ज़ाते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हो, जिसके लिए महब्बत व एहतराम और इताअ़त व फरमांबरदारी की अदना कमी साहिबे ईमान को ईमान के दायरे से बाहर कर देने के लिए काफी है, खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसको उसके वालिदैन और खुद उसकी जान से ज़ियादा महबूब ना हो जाऊँ।

हिज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर देखिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्या फरमाया ''किसी अरबी को अज़मी पर और किसी अज़मी को अरबी पर कोई फज़ीलत नहीं, तुम सब आदम की औलाद हो और आदम खाक से बने थे।''

जाहिलियत के तमाम खून यानी इन्तिक़ामे खून बातिल कर दिये गये, और सबसे पहले मैं अपने खानदान का खून रबीआ़ बिन हारिस के बेटे का खून बातिल करता हूं।

जाहिलियत के तमाम सूद भी बातिल कर दिये गये और सबसे पहले मैं अपने खानदान का सूद अब्बास इब्ने अब्दुल मुत्तलिब का खून बातिल करता हूं। बेशक तुम्हारा खून और तुम्हारा माल और तुम्हारी आबरू ताक़यामत इसी तरह हराम है जिस तरह यह दिन यह महीना यह शहर हराम है।

औरतों के मुआमले में खुदा से डरो, क्योंकि वह तुम्हारे ज़ेरे असर हैं, वह अपने मुआमले में इख्तियार नहीं रखतीं, लिहाज़ा उनका तुम पर हक़ है, उन्हें खाने, कपड़े का हक़ पूरी तरह हासिल है, तुमने उन्हें खुदा की अमानत के तौर पर अपनी रिफाक़त में लिया है।

मैं तुम में एक चीज़ छोड़ कर जा रहा हूं, और तुम उसको मज़बूती से पकड़े रहना, अगर तुम ने ऐसा किया तो तुम गुमराह ना होगे, वह

चीज़ क्या है? अल्लाह की किताब। मेरे बाद गुमराह ना हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो, तुम को खुदा के सामने हाज़िर होना पड़ेगा और वह तुम से तुम्हारे आमाल की बाज़पुर्स करेगा। अगर कोई हबशी कान कटा गुलाम भी तुम्हारा अमीर हो और वह तुम को खुदा की किताब के मुताबिक़ ले चले तो उसकी इताअ़त व फरमाबरदारी करना।

रस्मो रिवाज के बन्धन में जकड़े, ज़ात व बिरादरी के खानों में बंटे, इन्तिक़ाम की आग में सुलगते, नफरतों अदावत की आंधियों में हिचकोले खाते, ज़रा ज़रा सी बात पर दूसरों की टोपियां गिराते और पगड़ियां उछालते और सूद की हुर्मत के खिलाफ बिगुल बजाते, आज के इस मुआशरे में सीरते पाक के उन नमूनों को भी सामने लाने की ज़रूरत है और जब तक जिन्दगी के हर मैदान में सीरते पाक के नमूनों को नहीं अपनाया जायेगा, उस वक्त तक मुकम्मल दीन हमारी ज़िन्दगी में नहीं आ पायेगा।

''दाख़िल हो जाओ ईमान में पूरे पूरे''

तुमको हुजूरे पाक की तरफ से जो भी हुक्म मिले उसको पूरा करो, और जिस काम से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मना फरमायें उससे बाज़ रहो'' का पैग़ाम है।

❖❖❖

आदर्श शासक............

अमीरुल–मोमिनीन ने फिर पूछा– ''चुप क्यों हो गए? बताओ तो सही, क्या देश में गेहूँ इतनी मात्रा में उत्पन्न होता है कि यदि समस्त जनता केवल गेहूँ ही खाना पसन्द करे तो सबके लिए पूरा पड़ जाये?'' दूत ने उत्तर दिया ''नहीं अमीरुल–मोमिनीन! नहीं, देश में गेहूं की उपज अवश्य है और प्रयाप्त मात्रा में होता है परन्तु देश के प्रत्येक निवासी के लिए उपलब्ध हो, यह तो बहुत कठिन है। यदि देश का प्रत्येक व्यक्ति गेहूं ही खाना पसन्द करे तो कुछ ही दिनों में समस्त गेहूँ समाप्त हो जाये। देश में गेहूँ की इतनी उपज कहाँ कि प्रत्येक प्राणी के लिए उपलब्ध हो।''

राजदूत का यह उत्तर सुन कर हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा कि जब ऐसी परिस्थिति हो तो तुम मुझे किस प्रकार यह राय देते हो कि मैं गेहूँ खाया करूँ। मैं अपने को दूसरों की अपेक्षा कैसे प्रधानता दे सकता हूँ मैं वही खा सकता हूँ जो सबको मिल सके। मैं इसे उचित नहीं समझता कि शासक अपनी प्रजा से अच्छा जीवन व्यतीत करे। उसे तो वह खाना चाहिए जो सब खा सकें और वह पहनना चाहिए जो सब पहन सकें। उसे किसी भी अवस्था में ऐसा जीवन न अपनाना चाहिए जो हर व्यक्ति के लिए असम्भव हो।

.................जारी................

चिंताजनक है बढ़ती बेरोज़गारी

—डॉ0 मुहम्मद अहमद

(लेखक महोदय! लगभग एक साल या उससे कुछ ज़ियादा के बाद ''कान्ति'' फरवरी 2018, प्राप्त हुआ, धन्यवाद, पेशगी इजाज़त के बिना आपके दो लेख कम्पोज़िंग में दे दिये हैं, ताकि ''सच्चा राही'' के पाठक भी आपके यह लेख पढ़ें, उम्मीद है नागवार न होगा। सम्पादक)

मोदी सरकार पर यह आरोप भी लग रहा है कि उसके अब तक के कार्यकाल में रोज़गार के अवसर लगातार घट रहे हैं। युवा बेरोज़गारी से ग्रस्त है। जो सेवारत थे, उनमें से बहुतों की नौकरियां छूट गयीं हैं और कुछ की नौकरियों पर खतरे मंडरा रहे हैं। भारत की सूचीबद्ध कंपनियों के रोज़गार के आंकड़ों का प्रतिष्ठित अंग्रेजी समाचार पत्र ''इंडियन एक्सप्रेस द्वारा किये गये विश्लेषण के अनुसार वित्त वर्ष 2016—17 में ज़ियादातर कंपनियों में पिछले वर्षों की तुलतना में नौकरियां कम हुई हैं। इस समाचार पत्र के पास इन्फार्मेशन टेक्नालॉजी और फाइनेंशियल सर्विसेज सेक्टर कंपनियों को छोड़ कर अन्य क्षेत्रों की 121 कंपनियों के रोज़गार से जुड़े आंकड़ें हैं। ये सभी कंपनियां बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बी.एस.सी) में सूचीबद्ध हैं और वित्त वर्ष 2016—17 से जुड़े अनेक आंकड़े उपलब्ध हैं। आंकड़ों के अनुसार इन कंपनियों ने पिछले वित्त वर्ष के 742,012 की तुलतना में वित्त वर्ष 2016—17 में केवल 730,694 नौकरियां दीं। रोज़गार में 11,318 की ये कमी धातु, ऊर्जा, कैपिटल गुड्स, निर्माण क्षेत्र और एफ. एम.सी.जी. क्षेत्र की कंपनियों में हुई हैं। इन कम्पनियों के आंकड़ों से पुष्टि होती है कि नौकरियों में कमी लगातार दूसरे साल जारी है। जिन 107 कंपनियों के पिछले तीन वित्त वर्षों के आंकड़े हैं उनमें मार्च 2015 तक कुल 684,452 कर्मचारी थे जिनकी संख्या मार्च 2016 में घट कर 677,296 रह गयी और मार्च 2017 तक ये संख्या घट कर 669,784 हो गयी। नौकरी में कमी की संख्या छोटी लग सकती है, लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार यह एक प्रवृत्ति को दिखाती है जो चिंता का विषय है। देश की सबसे बड़ी कंपनियों के कर्मचारियों में कमी से इन कंपनियों के विस्तार की योजनाओं और निकटवर्ती विकास के निराशा की स्थिति का पता चलता है। कुछ समय पहले पेश किये गये सरकारी आंकड़ों में यह बात उजागर हुई थी कि बेरोज़गार लोगों में पढ़े—लिखे युवाओं की तादाद ही सबसे अधिक है। बेरोज़गारों में 25 फ़ीसदी 20 से 24 आयु वर्ग के हैं, जब कि 25 से 29 वर्ष की आयु वाले युवकों की तादाद 17 फ़ीसदी है। 20 साल से ज़ियादा उम्र के 14. 30 करोड़ युवाओं को नौकरी की तलाश है। विशेषज्ञों का

कहना है कि लगातार बढ़ता बेरोज़गारी का यह आंकड़ा सरकार के लिए गहरी चिंता का विषय है। ख़बरों के अनुसार वित्त वर्ष 2016–17 में छंटनी के मामले में देश की बड़ी कंपनियों के नाम भी सामने आये हैं। अध्ययन में स्पष्ट रूप से पता चला है कि लगातार दूसरे साल इन कंपनियों के कर्मचारियों की संख्या में कमी दर्ज की गयी। ख़ास कर मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों में मानव संसाधन समेत कई तरह के संसाधनों का पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा है, इसलिए ये कंपनियां नई नौकरियां देने के बदले अपने कर्मचारियों की संख्या में लगातार कमी कर रही हैं। अब सरकार ने यह बात स्वीकार भी कर ली है कि देश की अर्थव्यवस्था में मंदी आयी है और राजकोषीय घाटा बढ़ा है।

वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर एक सरकारी अध्ययन में यह बात पायी गयी कि महिलाओं में बेरोजगारी एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। भौतिकवाद ने उन्हें इसके लिए विवश किया है कि वे कमाएं भी। अतः हमारे देश में नौकरी की तलाश करने वालों में लगभग आधी महिलाएं शामिल हैं। बेरोज़गारों में 10वीं या 12वीं तक पढ़े युवाओं की तादाद 15 फ़ीसदी है। यह तादाद लगभग 2.70 करोड़ है। तकनीकी शिक्षा हासिल करने वाले 16 फ़ीसदी युवा भी बेरोज़गारों की क़तार में हैं। इससे साफ़ है कि देश के तकनीकी संस्थानों और उद्योग जगत में और बेहतर तालमेल ज़रूरी है। पिछले कुछ वर्षों में इंजीनियरिंग के डिग्रीधारी युवा बेरोज़गारी की ओर अग्रसर हैं। यह भी एक चिंताजनक स्थिति है, जिससे निबटने के लिए रोज़गार का मौलिक अधिकार बनाने के लिए लाया गया निजी विधेयक पिछले दिनों राज्यसभा में नामंजूर कर दिया गया। समाजवादी पार्टी के सांसद विश्वंभर प्रसाद निषाद ने रोज़गार को मौलिक अधिकार बनाने के लिए संविधान में संशोधन का विधेयक पेश किया। विधेयक पर दो घण्टे की चर्चा के बाद मत विभाजन के जरिए विधेयक निरस्त कर दिया गया। चर्चा के बाद श्रम व रोजगार मंत्री संतोष गंगवार ने जब निषाद से विधेयक वापस लेने का अनुरोध किया तो उन्होंने इन्कार कर दिया। इस पर उपसभापति पी0जे0 कुरियन ने कहा कि चूंकि यह संविधान संशोधन विधेयक है, इसलिए इसे मत विभाजन के ज़रिए ही पारित कराया जाएगा। उन्होंने निषाद से अपने फैसले पर दोबारा विचार करने को कहा लेकिन निषाद नहीं माने तब इस विधेयक पर मत विभाजन कराया गया और सदन ने 18 के मुक़ाबले 21 मतों से इसे नामंजूर कर दिया। एक सदस्य ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया। इससे पहले श्री गंगवार ने कहा बेरोज़गारी बेहद संवेदनशील विषय है और सरकार नवजवानों को रोज़गार मुहैया कराने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। इसके लिए कई राष्ट्रीय योजनाएं चलायी जा रही हैं, जिनके सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं। सरकार सदस्य के सुझावों पर विचार करते

हुए रोज़गार की अन्य योजना भी बनाएगी। उन्होंने बताया कि मनरेगा, कौशल विकास, मेक इन इंडिया जैसी योजनाएं रोज़गार को बढ़ावा देने में सकारात्मक भूमिका निभा रही हैं। उनका जवाब देते हुए सपा सांसद निषाद ने कहा कि सरकार के पास बेरोज़गारी के आंकड़े तक उपलब्ध नहीं हैं, तो बेरोज़गारी दूर करने की योजना कैसे काम करेगी? उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में हर साल दो करोड़ लोगों को रोज़गार देने की बात कही थी। इस हिसाब से पिछले तीन वर्षों में छह करोड़ लोगों को रोज़गार मिलना चाहिए था लेकिन ऐसा नहीं हुआ। देश में 30 वर्ष की आयु तक के लगभग 15 करोड़ लोग बेरोज़गार हैं। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि बेरोज़गार युवाओं की तेज़ी से बढ़ती तादाद देश के लिए ख़तरे की घंटी है। अतः सरकार को इस समस्या की ओर तुरंत ध्यान देना चाहिए। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में सेंटर फार द स्टडी ऑफ रीजनल डेवलपमेंट के अमिताभ कुंडू कहते हैं, "यह ख़तरे की स्थिति है। केन्द्र सरकार भारी तादाद में रोज़गार देने वाले उद्योग नई नौकरियां पैदा करने में नाकाम रही है। इसी से यह हालत पैदा हुई है"। एक अन्य अर्थशास्त्री प्रोफेसर डी.के. भट्टाचार्य कहते हैं, "बेरोज़गारों को नई सरकार से काफ़ी उम्मीदें हैं। इस समस्या के समाधान के लिए कौशल विकास और लघु उद्योगों को बढ़ावा देना ज़रूरी है।" वे कहते हैं कि युवाओं को नौकरी के लायक़ बनाने के लिए वोकेशनल ट्रेनिंग के ज़रिए कौशल विकास बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए।

(कान्ति फरवरी 2018 से ग्रहीत)

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी ....

कहा नहीं, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोने लगे, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रोता देख कर सब के सब रोने लगे, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया क्या तुम सुनते नहीं यानी सुनो, बेशक अल्लाह तआला आँसू बहाने पर और दिली सदमे पर अ़जाब नहीं फरमाता, हां इस जुबान की बदौलत आपने अपनी जुबान मुबारक की तरफ इशारा कर के फरमाया, इसकी वजह से अजाब करता है या रहम फरमाता है।

(बुखारी–मुस्लिम)

नौहा करने वाली की सज़ाः–

हज़रत अबू मालिक अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि नौहा करने वाली ने अगर मरने से पहले तौबा न की तो कियामत के दिन खड़ी की जायेगी और उस पर कतरान और बारिश का कुर्ता होगा। (मुस्लिम) कतरान अर्थात कतरान एक दवा बदबूदार और खली रंग के दरख्त से निकलती है यह खुजली वाले ऊँटों पर मली जाती है जिस पर आग बहुत जल्द सरायत करती है और जल्द भड़क जाती है।

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

काला-कलूटा जादूगर

बहुत सी चीज़ें ऐसी होती हैं जो रंग–रूप और देखने में सोने जैसे चमकीली नहीं होतीं, लेकिन गुण और उपयोगिता में वे अनमोल होती हैं। ऐसी ही चीज़ों में डामर या कोलतार का स्थान सबसे ऊँचा है। चौंको मत! तुम्हें डामर के बारे में केवल इतना ही मालूम है कि यह काले रंग का, चिपचिपा, दुर्गंधमय गाढ़ा–सा तरल पदार्थ है। यह सड़क बनाने में काम आता है। पर बात ऐसी नहीं है। यह डामर का केवल एक रूप है। जिस से तुम परिचित हो। डामर के और भी अनेक रूप और गुण हैं। इनसे परिचित होने पर तुम उसे एक जादूगर से कम नहीं समझोगे।

डामर से चीनी से कई गुना मीठी सैक्रीन बनती है।
किवाड़ों पर लगने वाले रंग–बिरंगे रोग़न बनते हैं।
तरह–तरह के रंग और सुगंध आदि इससे बनते हैं।

प्लास्टिक के खिलौने, ग्रामोफोन के रिकार्ड, फोटोग्राफी की रासायनिक सामग्री, ऐनक के फ्रेम और कीट नाशक दवाइयां भी डामर से बनती हैं। सिर दर्द की गोलियों की एस्परीन डामर से बनती है। इन सभी चीज़ों के अतिरिक्त दूसरी सैकड़ों वस्तुएं डामर से बनती हैं।

डामर जैसे पदार्थ से ही तरह–तरह के सेंट और एसेंस बनते हैं। ये दैनिक काम में आने वाली अनेक चीज़ों को सुगंधित करते हैं। देखने में डामर कितना काला होता है। लेकिन उसी से तरह–तरह के रंग मिलते हैं। जो कपड़ों आदि को रंगने के ही नहीं दवाईयों के भी काम आते हैं।

अब तुम यह अवश्य जानना चाहोगे कि डामर क्या चीज है? यह किस प्रकार बनाया जाता है? किसने उसकी खोज की? उससे ये सब वस्तुऐं कैसे मिलती हैं?

डामर अनेक कार्बनिक रसायनों का मिश्रण है। यह खनिज कोयले से प्राप्त होता है। जब कोयले से कई प्रकार की गैसें बनाई जाती हैं। तब उस समय काले रंग का गाढ़ा–सा चिपचिपा और दुर्गन्धमय द्रव इकट्ठा हो जाता है। इसी को डामर कहते हैं। यह केवल काले रंग का ही नहीं, भूरे, पीले गहरे और हल्के काले रंग का भी होता है।

कोलतार की खोज करने का श्रेय जर्मन प्रोफेसर जे0जे0 बेचर को है। उन्होंने 1765 में इसका पता लगाया। शुरु में इसे बेकार की वस्तु समझ कर फेंक दिया जाता था। जब 1820 में इससे कपड़े को वाटरप्रूफ बनाने की विधि मालूम हुई, तब इसकी ओर वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित हुआ। खोज करने पर धीरे–धरे इसके अन्य गुणों के बारे में पता चलता गया। इससे अनेक चीज़ें तैयार की जाने लगीं। आज तो इसने औद्योगिक तथा दूसरे कई क्षेत्रों में क्रांति मचा दी है। कौन जाने किसी समय बेकार समझी जाने वाली वस्तु के अन्दर और क्या–क्या गुण और विशेषताएं छिपी पड़ी हों? ◆◇◆

क़ारियाने सच्चा राही को सलाम

—इदारा

अस्सलाम ऐ क़ारियाने सच्चा राही अस्सलाम
ज़ोफ़ का ग़लबा है अब तो लीजिए मेरा सलाम
सोलह वर्षों तक दिया ख़िदमत का मौक़ा आपने
दर गुज़र करदें ख़ताएं और लें मेरा सलाम
तौबा की तौफ़ीक़ रब ने दी बराबर दोस्तों
दें दुआएं बख़्शा जाऊँ और लें मेरा सलाम
है फ़कत माबूद अल्लाह और कोई है नहीं
हैं नबी उसके मुहम्मद उन पे हों लाखों सलाम
बैठ कर पढ़ता नमाज़ें और पढ़ता हूं दुरूद
रब करे मक़बूल इन को है वही रब्बुल अनाम
जब तलक ज़िन्दा रहूं ज़िन्दा रहूं इस्लाम पर
ख़ातिमा ईमान पर हो या मुहैमिन या सलाम

उर्दू सीखये

—इदारा

उर्दू जुम्ले पढ़ने की कोशिश कीजिए, ज़रूरत पर पहले लिखे उसी नम्बर के हिन्दी जुम्ले से मदद लीजिए

(1) सारे अ़क्लमन्द सच्चाई को पसन्द करते हैं।

(2) सारे मज़ाहिब सच्चाई अपनाने की तालीम देते हैं।

(3) झूट बोलने से मुआ़शरे में बड़ी ख़राबियाँ आती हैं।

(4) रिश्वत ख़ोरी मुआ़शरे की बहुत बड़ी ख़राबी है।

(5) रिश्वत ख़ोरी काबिले सज़ा जुर्म है।

(6) इस्लाम रिश्वत लेने वाले को और रिश्वत देने वाले को जहन्नमी बताता है।

(7) चोरी करना बहुत बड़ा गुनाह है, इस्लाम में चोरी की सज़ा हाथ काटा जाना है।

(8) काम चोरी भी बहुत बड़ा गुनाह है और यह बड़ी ख़ियानत है।

(9) किसी की बहन बेटी पर बुरी निगाह डालना कबीरा गुनाह है।

(10) हर हाल में अपने ख़ालिक़ व मालिक को याद रखना चाहिए।

(۱) سارے عقلمند سچّائی کو پسند کرتے ہیں۔

(۲) سارے مذاہب سچّائی اپنانے کی تعلیم دیتے ہیں۔

(۳) جھوٹ بولنے سے معاشرہ میں بڑی خرابیاں آتی ہیں۔

(۴) رشوت خوری معاشرے کی بہت بڑی خرابی ہے۔

(۵) رشوت خوری قابلِ سزا جرم ہے۔

(۶) اسلام رشوت لینے والے اور رشوت دینے والے کو جہنّمی بتاتا ہے۔

(۷) چوری کرنا بہت بڑا گناہ ہے، اسلام میں چوری کی سزا ہاتھ کاٹا جانا ہے۔

(۸) کام چوری بھی بہت بڑا گناہ ہے، اور یہ بڑی خیانت ہے۔

(۹) کسی کی بہن بیٹی پر بری نگاہ ڈالنا کبیرہ گناہ ہے۔

(۱۰) ہر حال میں اپنے خالق و مالک کو یاد رکھنا چاہیئے۔